हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 08 | अंक : 158 | प्रयागराज, सोमवार 19 सितम्बर , 2022 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

मोहाली की चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में छात्राओं के आपत्तिजनक वीडियो सोशल साइट पर अपलोड करने के आरोपों के बाद स्टूडेंटस का हंगामा

मोहाली/चंडीगढ। गर्ल्स हॉस्टल में आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड करने और सोशल साइट पर अपलोड करने की सूचना के बाद चंडीगढ़ विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों ने भारी रोष प्रदर्शन किया गया। आरोप है कि एक साथी लड़की ने ही वीडियो लीक किया। पुलिस के अनुसार आरोपी लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया है। वहीं पहले यह बात सामने आ रही थी कि होस्टल की एक छात्रा ने आत्महत्या की कोशिश की मगर मोहाली के एसएसपी विवेक सोनी ने एक टीवी चौनल में स्पष्ट किया है कि यह केवल अफवाह है और एक लड़की को घबराहट के बाद मेडिकल एड दी गयी थी और वह ठीक है। उन्होंने कहा है कि आरोपी लड़की से अब तक कोई आपत्तिजनक वीडियो नहीं मिला है। विश्वविद्यालय प्रबंधन ने भी दावा किया कि किसी भी लड़की ने आत्महत्या करने की कोशिश नहीं की थी बल्कि कुछ लड़कियां खबर सुन कर बेहोश हो गई थीं। परिसर में कोई आत्महत्या का प्रयास नहीं किया गया है। उन्हें प्राथमिक उपचार दिया गया और कैंपस वापस भेज दिया गया। यह कहा जा रहा है कि लड़की ने एक वीडियो बनाकर जो अपने जानकार को शिमला भेजा था। वह वीडियो खुद उसका ही था। सूत्रों के अनुसार इससे पहले गर्ल्स हॉस्टल की 3 छात्राओं ने वार्डन से संपर्क किया और आरोप लगाया कि एक छात्रा आपत्तिजनक वीडियो बना रही है। वहीं वार्डन ने बताया कि आरोपों की जांच कर रहे हैं और कोई आपत्तिजनक वीडियो नहीं मिला है। मोहाली के एसएसपी विवेक सोनी ने कहा, 'अभी तक आरोपी के पास अन्य लड़कियों के कोई आपत्तिजनक वीडियो नहीं मिले हैं। मामले की गहन जांच की जा रही है।' इससे पहले, डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि वीडियो बनाने के आरोप में एक लड़की को हिरासत में लिया गया है। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के चांसलर सतनाम सिंह संधू ने कहा, 'मुझे अभी तक इस घटना की विस्तृत जानकारी नहीं मिली है। कल रात एक विरोध प्रदर्शन हुआ और छात्रों को सभी स्पष्टीकरण दिए गए हैं। हम पुलिस की मदद से इसकी क्रॉस–चेकिंग कर रहे हैं।' पंजाब के उच्च शिक्षा मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर ने कहा कि मोहाली के डीसी और एसएसपी पूरी जांच करेंगे और किसी को बख्शा नहीं जाएगा। इस बीच, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय के छात्रावास के कई विद्यार्थियों ने तड़के स्थिति को गलत तरीके से संभालने के लिए विश्वविद्यालय प्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और नारेबाजी की। विभिन्न वीडियो में, होस्टलर न्याय की मांग करते हुए और परिसर में सुरक्षा कर्मियों को गाली देते हुए दिखाई दे रहे हैं'। प्रदर्शनकारियों को छात्रावास के गेट खोलते और परिसर के बाहर भागने की कोशिश करते देखा गया।

चंडीगढ़ विश्वविद्यालय की घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण, लोग जिम्मेदारी से करें व्यवहार : सोनू सूद

नई दिल्ली। पंजाब के मोहाली के एक निजी विश्वविद्यालय में छात्राओं के कुछ आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड किए जाने की ''अफवाह को लेकर विरोध प्रदर्शन के कुछ घंटे बाद अभिनेता सोनू सूद ने कहा कि जो हुआ वह 'दुर्भाग्यपूर्ण है और लोगों से जिम्मेदारी से व्यवहार करने का आग्रह किया। पुलिस ने कहा कि लुधियाना–चंडीगढ़ मार्ग पर स्थित चंडीगढ़ विश्वविद्यालय परिसर के विद्यार्थियों ने इन ''अफवाहों पर विरोध प्रदर्शन किया कि कई छात्राओं के कुछ आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड किए गए थे। चंडीगढ़ के रहने वाले सूद ने लोगों से 'हमारी बहनोंश के साथ खड़े होने को कहा। सूद ने ट्वीट किया, 'चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में जो कुछ हुआ वह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। यह हमारे लिए अपनी बहनों के साथ खड़े होने और एक जिम्मेदार समाज का उदाहरण स्थापित करने का समय है। यह पीड़ितों के लिए नहीं, हमारे लिए परीक्षा की घड़ी है। जिम्मेदार बनें। विश्वविद्यालय के प्राधिकारियों ने उन रिपोर्ट को खारिज कर दिया है कि कई छात्राओं के वीडियो बनाए गए और सोशल मीडिया पर साझा किए गए।

बुलंदशहर में मुठभेड़ के बाद घायल इनामी बदमाश गिरफ्तार, सिपाही को भी गोली लगी

बुलंदशहर। जिले के डिबाई थाना क्षेत्र में पुलिस ने 50 हजार रुपये के ईनामी बदमाश को एक मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। मुठभेड़ में पुलिस की गोली लगने से बदमाश घायल हो गया है, जबकि एक पुलिसकर्मी को भी गोली लगी है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।

डिबाई के पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) वरुण कुमार सिंह ने बताया डिबाई थाना इलाके में शनिवार की रात पुलिस मुठभेड़ के दौरान एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया, जिसका नाम कप्तान उर्फ मंगल है। उन्होंने बताया कि बदमाश मूलरूप से मध्य प्रदेश के मुरैना जिले का निवासी है और वह 2014 से ही डकैती के कई मामलों में वांछित था। सिंह के मुताबिक कप्तान बावरिया गिरोह का सक्रिय सदस्य भी है जिसके ऊपर 50,000 रुपये का इनाम भी घोषित है।

बदमाश के पास से अवैध हथियार और मोटरसाइकिल भी बरामद की गयी है। घटना का ब्यौरा देते हुए सीओ ने बताया कि शनिवार रात डिबाई थाना पुलिस को सूचना मिली कि एक मोटरसाइकिल पर दो बदमाश लूटपाट के इरादे से घूम रहे हैं जिनके पास अवैध हथियार भी हैं।

उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था देश और दुनिया के लिए एक नजीर : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को राज्य की कानून–व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश की कानून–व्यवस्था देश और दुनिया के लिए एक नजीर बनती हुई दिखाई दी है। मुख्यमंत्री ने रविवार को यहां अपने पांच कालिदास मार्ग स्थित सरकारी आवास से पुलिस आधुनिकीकरण योजना के तहत 56 जिलों के लिए मॉडर्न प्रिजन वैन (कैदी वाहन) को हरी झंडी दिखाने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश की कानून–व्यवस्था देश और दुनिया के लिए एक नजीर बनती हुई दिखाई दी है। उन्होंने कहा कि लोग अक्सर उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था की चर्चा करते हैं और उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि जो राज्य सबसे संवेदनशील माना जाता था, 2017 से पहले जिस राज्य में दंगे फसाद, अराजकता, गुंडागर्दी चरम पर मानी जाती थी, वहां कानून का राज स्थापित है। बिना नाम लिए विपक्षी दलों की पूर्ववर्ती सरकारों पर निशाना साधते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पहले पुलिस भागती थी और अपराधी दौड़ाते थे, लेकिन आज कानून के साथ खिलवाड़ करने वाले कोई भी व्यक्ति हो उसे मालूम है कि कानून की क्या कीमत होती है और उसे कानून का भय है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विगत पांच वर्ष के अंदर देश में आबादी के लिहाज से सबसे बड़े राज्य में बेहतर कानून व्यवस्था के लिए पुलिस आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया हम लोगों ने प्रारंभ किया था, माडर्न प्रिजन वैन उसी श्रृंखला का एक हिस्सा है। 56 मॉडर्न प्रिजन वैन को गृह विभाग को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत आनन्द की अनुभूति हो रही है। उन्होंने कहा कि पहले पुराने वाहनों से कैदियों को जेल ले जाया जाता था जिसमें तकनीक का अभाव था और उससे या तो कैदी भाग जाते थे या आपराधिक गिरोह हमला करके कैदियों को छुड़ा लेते थे, लेकिन उपलब्ध कराए जा रहे 56 मॉडर्न प्रिजन वैन हर तकनीक से युक्त हैं।'' उन्होंने कहा कि इसमें पुलिसकर्मी सुरक्षित रहेंगे ही, कैदी को भी जेल से अदालत और अदालत से जेल तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। अब तक के प्रयासों की चर्चा करते हुए योगी ने कहा कि प्रदेश में 25 करोड़ की आबादी को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से और उनके मन में सुरक्षा का अहसास कराने की दृष्टि से सरकार ने अनेक कदम उठाये हैं, फिर चाहे वह पुलिस भर्ती की पारदर्शी प्रक्रिया हो, या उन्हें प्रशिक्षित कर व्यावसायिक दृष्टि से दक्ष बनाने से लेकर तमाम प्रभावी कदम हो। योगी ने कहा कि भर्ती की प्रक्रिया में एक लाख 56 हजार पुलिसकर्मियों की भर्ती समयबद्ध ढंग से पूरा करते हुए रिक्तियों को न केवल दूर किया गया बल्कि पुलिस बल के आधुनिकीकरण और उन्हें तकनीक से भी लैस किया गया।

गुजरात में हार के डर से आप को 'कुचलने की कोशिश कर रही है भाजपा : केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर तीखा प्रहार करते हुए आरोप लगाया कि वे भ्रष्टाचार से लड़ने के नाम पर आम आदमी पार्टी (आप) को 'कुचलने' की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि उन्हें गुजरात चुनाव में हार का डर है। आप के निर्वाचित प्रतिनिधियों के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने यह भी आरोप लगाया कि उनकी पार्टी के मंत्रियों और नेताओं को मोदी सरकार भ्रष्टाचार के झूठे मामले में फंसाने की कोशिश कर रही है क्योंकि भाजपा ''गुजरात में आप की बढ़ती लोकप्रियता को पचा नहीं पा रही है। पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल ने आरोप लगाया कि भाजपा गुजरात विधानसभा चुनाव के मद्देनजर आप के बढ़ते प्रभाव से इस कदर बौखला गई है कि 'प्रधानमंत्री के सलाहकार हिरेन जोशी ने कई टीवी चौनलों के मालिकों तथा उनके संपादकों को गंभीर नतीजे भुगतने की चेतावनी देते हुए गुजरात में आप को कवरेज न देने को कहा है। बहरहाल, केजरीवाल के आरोपों पर प्रधानमंत्री कार्यालय या जोशी की कोई प्रतिक्रिया अभी नहीं मिली है। केजरीवाल ने कहा, ''ऐसा करना बंद कीजिए। अगर ये संपादक जोशी के संदेशों का स्क्रीनशॉट साझा कर देंगे तो प्रधानमंत्री तथा उनके सलाहकार दोनों देश को अपना चेहरा नहीं दिखा पाएंगे। उन्होंने कहा, ''हम गुजरात में सरकार बनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री की 'रेवड़ी संस्कृति टिप्पणी को लेकर उन पर निशाना साधते हुए केजरीवाल ने कहा कि आप की मुफ्त सुविधाओं की यह कहकर आलोचना की जा रही है कि लोगों को निःशुल्क सुविधाएं उपलब्ध कराने से देश की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो जाएगी। उन्होंने कहा, ''कोई बेईमान, भ्रष्ट और गद्दार व्यक्ति ही यह कहेगा कि निःशुल्क सुविधाएं देश के लिए सही नहीं हैं। अगर कोई नेता कहता है कि मुफ्त सुविधाएं देने से देश की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो जाएगी तो आपको समझना होगा कि उनके इरादे गलत हैं।

भारत में कोविड-19 के उपचाराधीन मरीजों की संख्या बढ़कर 47,922 हुई

नई दिल्ली। भारत में पिछले 24 घंटे में कोविड–19 के 5,664 नए मामले सामने आए, जिससे देश में संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 4,45,34,188 हो गई, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या 46,848 से बढ़कर 47,922 पर पहुंच गई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा रविवार सुबह जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, संक्रमण से 35 और लोगों के दम तोड़ने से मृतक संख्या बढ़कर 5,28,337 हो गई। इनमें संक्रमण से मौत की पुष्टि के बाद केरल में दर्ज किए गए 21 मामले भी शामिल हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि उपचाराधीन मरीजों की संख्या कुल मामलों का 0.11 प्रतिशत है, जबकि कोविड–19 से ठीक होने वालों की राष्ट्रीय दर बढ़कर 98.71 प्रतिशत हो गई है। पिछले 24 घंटे की अवधि में उपचाराधीन मरीजों की संख्या में 1,074 की वृद्धि दर्ज की गई। गौरतलब है कि देश में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी।

पीएम मोदी के जन्मदिन पर मिलें उपहारों की नीलामी शुरू

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट किए गए उपहारों की ऑनलाइन नीलामी में मोदी को दिया गया राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के पूर्व कैडेट का कार्ड, अयोध्या में बन रहे राम मंदिर की कई प्रतिकृतियां और चेन्नई में हाल में आयोजित शतरंज ओलंपियाड के शुभंकर की प्रतिमा की बेहद मांग है। मूर्तिकार अरुण योगीराज द्वारा बनाई गई नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमूर्ति और राष्ट्रमंडल खेलों के विजेताओं द्वारा मोदी को भेंट किए गए उपहारों सहित तकरीबन 1,200 से ज्यादा उपहारों की ऑनलाइन नीलामी शनिवार को आरंभ हो गयी और यह काम दो अक्टूबर तक चलेगा। नीलामी वेब पोर्टल के जरिए की जा रही है। वेब पोर्टल पर एक श्रेणी है, जिसमें 'मोस्ट पार्टिसिपेटेड ऑक्शन (नीलामी के लिए सर्वाधिक मांग वाली वस्तुएं) वस्तुओं को रखा गया है। इस मद की सामग्रियों में एनसीसी द्वारा पूर्व कैडेट होने के कारण प्रधानमंत्री मोदी को दिया गया कार्ड शामिल है, जिसमें प्रधानमंत्री की तस्वीर भी है। इस कार्ड के लिए रविवार को पूर्वाह्न 11 बजे तक 20 से अधिक बोलियां लग चुकी थीं। नीलामी की प्रक्रिया मोदी के जन्मदिन पर शनिवार पूर्वाह्न 10 बजे शुरू हुई थी।

इस श्रेणी में अयोध्या में निर्माणाधीन राम मंदिर के विभिन्न आकार एवं वजन के कई प्रतिरूप शामिल हैं। इनमें से एक प्रतिकृति प्रधानमंत्री को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भेंट की थी। इसमें राम मंदिर का लकड़ी का एक छोटा प्रतिरूप है, जिसके चारों ओर शीशा लगा है। राम मंदिर भगवान राम की जन्मभूमि पर बनाया जा रहा है। छह किलोग्राम वजनी इस प्रतिकृति का आधार मूल्य 10,800 रुपए है। नीलामी वेबसाइट के अनुसार, इस श्रेणी में राम मंदिर की ढाई किलोग्राम, 3.2 किलोग्राम और 1.75 किलोग्राम की प्रतिकृतियां भी शामिल है। इसके अलावा इस श्रेणी में धातु का बना एक शंख, भगवान गणेश की प्रतिमा, एक त्रिशूल और तिरुपति बालाजी महाराज की लकड़ी की बनी प्रतिमा की प्रतिकृतियां भी शामिल हैं। शंख के लिए रविवार पूर्वाह्न 11 बजे तक 30 से अधिक बोलियां लग चुकी थीं। चेन्नई में 2022 में हुए शतरंज ओलंपियाड के शुभंकर और आधिकारिक लोगो का प्रतिनिधित्व करने वाली एक प्रतिमा की भी नीलामी में काफी मांग है। एक गदा, एक अलंकृत तलवार, अशोक स्तंभ की एक धातु की मूर्ति और नटराज की एक मूर्ति भी उन वस्तुओं में शामिल है, जिनकी सर्वाधिक मांग है।

एनआईए ने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में 40 स्थानों पर पीएफआई के खिलाफ की छापेमारी, 4 हिरासत में

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने आतंकी कृत्यों को अंजाम देने और धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने के लिए कथित तौर पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने से जुड़े एक मामले में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के खिलाफ रविवार को तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में 40 स्थानों की तलाशी ली। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। एनआईए के एक प्रवक्ता ने बताया कि तेलंगाना में 38 स्थानों और आंध्र प्रदेश में दो स्थानों पर की गई तलाशी के दौरान चार लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया। अधिकारी ने कहा कि अभियान के दौरान डिजिटल उपकरण, दस्तावेज, दो खंजर और 8.31 लाख रुपये से अधिक नकदी सहित अन्य आपत्तिजनक सामग्री जब्त की गई। मामला शुरू में 4 जुलाई को तेलंगाना के निजामाबाद थाने में दर्ज किया गया था और राज्य पुलिस द्वारा जांच के दौरान चार आरोपियों–अब्दुल कादर, शेख सहदुल्ला, मोहम्मद इमरान और मोहम्मद अब्दुल मोबिन को गिरफ्तार किया गया था। प्रवक्ता ने कहा कि बाद में एनआईए ने जांच को आगे बढ़ाने के लिए 26 अगस्त को मामला फिर से दर्ज किया। अधिकारी ने कहा कि तेलंगाना में 38 स्थानों पर छापेमारी की गई, जिसमें सबसे अधिक 23 स्थानों पर निजामाबाद में, उसके बाद जगत्याल में सात, हैदराबाद में चार, निर्मल में दो और आदिलाबाद तथा करीमनगर जिलों में एक–एक स्थान पर छापेमारी की गई। अधिकारी ने कहा कि कादर और 26 अन्य लोगों से संबंधित मामले में आंध्र प्रदेश के कुर्नूल और नेल्लोर जिलों में एक–एक जगह तलाशी ली गई। साथ ही, उन्होंने कहा कि आरोपी आतंकी कृत्यों को अंजाम देने और धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर रहे थे। प्रवक्ता ने कहा कि मामले में जांच जारी है।

अवैध पटाखे बनाते समय विस्फोट, मकान की छत उड़ी 4 घायल

बागपत। बागपत के चांदी नगर थाना क्षेत्र के घिटौरा गांव में एक मकान में विस्फोटक पदार्थ फटने से चार लोग झुलस गए। घिटौरा गांव में एक मकान मे विस्फोटक पदार्थ फटने से चार लोग झुलस गये सूचना पर पहुची पुलिस ने मकान की छत उखाड़ आग को बुझाया। घायल आरोपी मौकें से फरार हो गये पुलिस जाचं मे जुटी है। घिटौरा निवासी दिनेश पुत्र जगदीश के मकान मे काफी समय से पटाखों के बनाने का काम चल रहा था रविवार सुबह 9 बजें उसके मकान में विस्फोटक पदार्थ फटने से मकान मे आगं लग गयी और विस्फोटक फटने से चार लोग झुलस गयें जो घायल अवस्था में मौकें से फरार हो गए।

जयराम रमेश ने चीतों के पुनर्वास को लेकर पिछली सरकारों की आलोचना पर की मोदी की खिंचाई

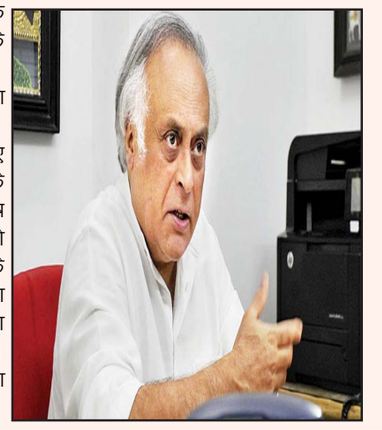

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने रविवार को ट्विटर पर एक पत्र साझा करते हुए दावा किया कि उन्होंने 2009 में 'प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत की और भारत में चीतों को लाने के लिए पिछली सरकारों के रचनात्मक प्रयास नहीं करने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आरोपों पर उन्हें 'अविवेकपूर्ण झूठा करार दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को पिछली सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा था कि सात दशक पहले देश से विलुप्त हो जाने के बाद भारत में चीतों को फिर से लाने के लिए कोई रचनात्मक प्रयास नहीं किए गए। मोदी ने यह टिप्पणी मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले के कुनो नेशनल पार्क (केएनपी) में नामीबिया से लाए गए आठ में से तीन चीतों को विशेष बाड़ों में छोड़ने के बाद की थी। रमेश ने ट्वीट किया, 'यह वो पत्र है, जिसके जरिए 2009 में 'प्रोजेक्ट चीता शुरू किया गया था। हमारे प्रधानमंत्री अविवेकपूर्ण झूठे हैं। मैं कल इस पत्र को जारी नहीं कर सका क्योंकि मैं 'भारत जोड़ो यात्राश में व्यस्त था। ट्वीट के साथ उन्होंने उस पत्र को साझा किया, जो उन्होंने तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्री के रूप में 2009 में भारतीय वन्यजीव ट्रस्ट के एम. के. रंजीतसिंह को लिखा था। पत्र में रमेश ने रंजीतसिंह को चीतों के पुनर्वास के लिए एक कार्ययोजना तैयार करने और उसमें पुनर्वास के लिये विभिन्न संभावित स्थलों का विस्तृत विश्लेषण शामिल करने को कहा था। रमेश की इस टिप्पणी पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री मोदी की मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान में चीतों को छोड़े जाने को एक ''तमाशा कहा था, जिसे उन्होंने राष्ट्रीय मुद्दों और 'भारत जोड़ो यात्रा से ध्यान भटकाने का एक और पैंतरा बताया था।

दिल्ली की झुग्गी-बस्तियों के बच्चों और युवाओं ने 'प्रधानमंत्री क्रॉस कंट्री रेस' में हिस्सा लिया

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा रविवार को दिल्ली में आयोजित 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी क्रॉस कंट्री रेस' में राष्ट्रीय राजधानी की झुग्गी–बस्तियों में रहने वाले हजारों बच्चों और युवाओं ने हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में भाजपा द्वारा 'सेवा पखवाड़ा' मनाया जा रहा है और इसी कड़ी में आयोजित इस दौड़ को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ध्यानचंद स्टेडियम में हरी झंडी दिखाई। शाह ने कहा कि इस दौड़ का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा में लाने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ यह दौड़ बच्चों को खेल से जोड़ेगी और उनका आत्मविश्वास बढ़ाएगी।

सम्पादकीय

फजीहत की पेंशन

पिछले दिनों हरियाणा की वह घटना राष्ट्रीय मीडिया में सुर्खियां बनी, जिसमें रोहतक के 102 वर्षीय दुलीचंद ने वश्द्धावस्था पेंशन बंद होने पर रचनात्मक तरीके से विरोध करके सरकारी तंत्र जगाया। उन्होंने बाकायदा बैंड–बाजे के साथ बारात निकाली। वे हाथ में तख्ती लिये थे कि 'तुम्हारा फूफा अभी जिंदा है'। दरअसल, दुलीचंद कागजों में जीवित नहीं दिखाये गये थे। वे समाज कल्याण विभाग के दफ्तरों के चक्कर काटते थक गये। जब कोई राह न दिखी तो रचनात्मक विरोध का यह तरीका अपनाया। निस्संदेह, इस घटनाक्रम ने उनींदे तंत्र को जगाया। न केवल समाज कल्याण विभाग हरकत में आया बल्कि स्वयं मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने जनता दरबार के जरिये वश्द्धावस्था पेंशन से वंचित लोगों का दुख–दर्द सुना। यहां तक कि पेंशन से वंचित एक महिला को न केवल पेंशन तुरंत शुरू होने का आश्वासन दिया बल्कि एक माह की पेंशन अपनी जेब से देकर संवेदनशील शासक का उदाहरण भी दिया। सवाल ये है कि समाज कल्याण विभाग ऐसी पहल क्यों नहीं करता? यह जानते हुए भी कि उम्र के इस पड़ाव में शारीरिक शैथिल्य व आय के संसाधन न होने पर बुजुर्ग वैसे ही परेशान रहते हैं। तो पेंशन के गिने–चुने पैसे तो कम से कम सही समय पर मिल जायें। आखिर ऐसा क्यों होता है कि जीवित लोगों को खुद को जिंदा दिखाने के लिये दर–दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं? सवाल यह भी कि पेंशन बंदी किस आधार पर की जाती है जबकि व्यक्ति जीवित रहता है? वैसे भी साल में एक बार पेंशनरों को संबंधित विभाग में अपने जीवित होने का प्रमाण पत्र बाकायदा देना ही पड़ता है। सवाल यह भी कि क्यों ऐसे दोषी कर्मचारियों व अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती, जो वास्तविक तथ्यों की जांच किये बिना ही किसी की पेंशन रोक देते हैं। सही मायनों में असहाय बुढ़ापे में पेंशन एक प्राणवायु की तरह होती है। वैसे तो इतने पैसे में महंगाई के जमाने में आता ही क्या है लेकिन परिस्थितियों के चलते उसके भी खास मायने होते हैं। निस्संदेह, पेंशन जैसे विभाग मौजूदा दौर में एक पोल खाता डिपार्टमेंट बन गये हैं। किसी को जीवित रहते मश्तक घोषित करने की खबर आती है, तो किसी के परिवार को वर्षों तक मरने के बाद भी पेंशन मिलती रहती है। पेंशन वितरण में कई तरह के घपले सामने आते रहते हैं। जो दर्शाता है कि संबंधित विभाग जिम्मेदारी व संवेदनशील ढंग से कार्य नहीं करता है। निस्संदेह, इस विभाग के लोगों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि वे बुजुर्गों से कैसे व्यवहार करें। उनके मामलों के निस्तारण में बेहद संवेदनशीलता दिखाएं। यदि विभाग के लोग जिम्मेदारी से अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे, तो दुलीचंद जैसे प्रकरण सामने नहीं आयेंगे। वहीं यह भी विडंबना है कि जरूरतमंद वर्ग की पेंशन को एक राजनीतिक एजेंडे की तरह दर्शाया जाता है। चुनाव से पहले कई राजनीतिक दल लंबी–चौड़ी हांकते हैं कि हम सत्ता में आये तो इतनी पेंशन दे देंगे। जबकि वे सरकार के सीमित संसाधनों को जानते हैं।

कचरा निस्तारण पर गैर जिम्मेदाराना रवैया

केन्द्र और राज्य सरकार पिछले लम्बे अरसे से स्वच्छता अभियान के बड़े बड़े आयोजन और दिखावा करते आ रहे है। ठीक इसके विपरीत जिस तरह से कचरे की अनदेखी और लापरवाही के कारण राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण जिस तरह से राज्यों एवं स्थानीय निकायों पर जुर्माना ठोक रहा है वह इस बॉत का प्रतीक है कि सरकारें और स्थानीय निकाय प्रबंधन कचरे को लेकर गम्भीर नही है। ताजे उदाहरण में राजस्थान सरकार पर 3500 करोड़ के जुमाने के साथ इसके कुछ और पहले वह बंगाल सरकार पर सीवेज शोधन संयंत्रों को सही तरह संचालित न करने के कारण 3500 करोड़ रुपये का जुर्माना लगा चुका है। एनजीटी उत्तर प्रदेश सरकार को कचरे का उचित प्रबंधन न कर पाने के कारण पर्यावरणीय मुआवजे के रूप में 120 करोड़ रुपये की राशि जमा करने का निर्देश दे चुका है। कूड़े के निरस्तारण के लिए जारी राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण गाइड लाइन और दिशा निर्देशों की कदम कदम पर अनदेखी की जा रही है लेकिन सरकार और निकाय प्रबंधन सो रहे है। देखा जाए तो प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर पृथ्वी को हम कचरे के ढेर में परिवर्तित करते जा रहे हैं। नदी, झील, तालाब और महासागरों को हमने कूड़ाघर बना दिया है। पहाड़ की वादियों, बुग्यालों और हिमालय में भी हम कूड़े का जहर घोलने से पीछे नहीं हैं। इसी कारण जल और थल प्रदूषित हो रहे हैं। आसमान (हवा) को जहरीली गैसों ने प्रदूषित कर दिया है। ये गैंसे उद्योगों और परिवहन माध्यमों सहित 'एसी' जैसे विभिन्न उत्पादों से निकलती है, लेकिन इसमें बड़ा योगदान इंसानों

द्वारा विभिन्न स्थानों पर डंप किए गए कचरे का भी है। ये कचरा तब और ज्यादा खतरा बन जाता है, जब खुले में ही इसे जला दिया जाता है। लेकिन सबसे बड़ी चिंता का विषय कचरे का ठीक से प्रबंधन करने की व्यवस्था न करने वाले नगर निकाय और हमारी सरकार हैं। जिस करण देश में विभिन्न बीमारियां जन्म ले रही हैं।

भारत के नगर निकायों में प्रतिदिन लगभग 1 लाख 47 हजार 613 टन कचरा जनरेट होता है, लेकिन लगभग 50 प्रतिशत कचरा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, दिल्ली, गुजरात और कर्नाटक जैसे पांच राज्य अकेले ही जनरेट करते हैं। कचरा प्रबंधन में समस्या न हो इसके लिए समय समय पर जनता और नगर निकायों को विभिन्न माध्यमों से घरों से कूड़ा लेने से पहले ही कचरे का पश्थ्कीकरण (गीला और सूखा कूड़ा अलग अलग) करने की सलाह दी जाती है। लेकिन देश के समस्त नगर निकायों के 25–30 प्रतिशत वार्ड कूड़े के स्रोत पर ही कचरे का पश्थ्कीकरण नहीं करते हैं। एक रिर्पोट के मुताबिक सबसे ज्यादा सॉलिड वेस्ट महाराष्ट्र से निकलता है। जबकि इस वर्ष मई में आई एक रिपोर्ट प्रदूषण को लेकर चौकाने वाली है। द लैंसेट में छपे एक अध्ययन के मुताबिक, भारत और चीन वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों के मामले में अग्रणी देश हैं. भारत में जहां हर साल करीब 24 लाख मौतें प्रदूषण की वजह से होती हैं, वहीं चीन में यह आंकड़ा 22 लाख है. पत्रिका द लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, पूरी दुनिया में प्रदूषण की वजह से हर साल करीब 90 लाख लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं। वहीं वर्ष 2000 के बाद की बात करें तो कार, ट्रक और उद्योगों से निकलने वाले धुएं से होने वाली मौत में करीब 55 फीसदी का इजाफा हुआ है। देखा जाए तो निर्माण कार्य, वाहनों से निकले धुएं, कचरा और पराली प्रदूषण की मुख्य वजह रहे हैं। अब प्रदूषण फैलाने वाले कारकों में होटल, रेस्टोरेंट, मोटल्स, बैंक्वेट हॉल भी नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने शामिल कर दिए हैं। ट्रिब्यूनल के मुताबिक मानकों के विपरीत निर्माण समेत प्रदूषण फैलाने की तमाम गतिविधियां इनमें होती हैं। इन पर रोक लगाने के लिए स्थानीय निकाय और क्षेत्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश है। जारी निर्देशों के तहत होटल, मोटल में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाना अनिवार्य है। 20 या इससे कम कमरों वाले होटल, 100 वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाले बैंक्वेट हॉल और 36 लोगों की क्षमता वाले रेस्टोरेंट को ईटीपी लगाना होगा। ईटीपी से होने वाले डिस्चार्ज में पर्यावरणीय मानकों का पालन करना होगा। जिसकी जांच संबंधित विभाग निर्धारित अलग–अलग समय पर करेंगे। लेकिन इसका शायद रत्ती भर अनुपालन नही किया जा रहा है। यदि स्वच्छता अभियान अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है तो इसके लिए जितनी जिम्मेदार राज्य सरकारें और उनके नगर निकाय हैं उतना ही लोगों की यह मानसिकता कि कचरे का निस्तारण करना केवल सरकारों की जिम्मेदारी है। पिछले कुछ समय से एनजीटी यानी राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण कचरा निस्तारण में लापरवाही बरतने अथवा पर्यावरण की अनदेखी के कारण एक के बाद एक राज्यों पर जुर्माना लगाने में लगा हुआ है। गत दिवस उसने राजस्थान सरकार पर तीन हजार करोड़ रुपये का जुर्माना इसलिए लगाया, क्योंकि राज्य के कुछ शहरों में औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले प्रदूषित पानी को नदियों में उड़ेला जा रहा था, तो कुछ में कचरे का निस्तारण ढंग से नहीं किया जा रहा था। इसके पहले एनजीटी ने महाराष्ट्र सरकार पर 12 हजार करोड़ रुपये का जुर्माना ठोस और तरल कचरे का प्रबंधन करने में नाकामी के चलते लगाया था। हाल के दिनों में एनजीटी पर्यावरण को क्षति पहुंचाने के कारण कई राज्य सरकारों अथवा उनके नगर निकायों के खिलाफ लगातार सख्ती दिखा रखा है। यह सख्ती यही बताती है कि राज्य सरकारें, उनके नगर निकाय और प्रदूषण की रोकथाम करने वाले विभाग अपने दायित्वों का सही तरह निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। यह स्थिति पूरे देश और यहां तक कि राजधानी दिल्ली में भी देखने को मिल रही है। जबकि करीब दो सप्ताह पहले एनजीटी ने यमुना में बढ़ते प्रदूषण को लेकर दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव को फटकार लगाते हुए अपना असंतोष प्रकट किया था। यह भी किसी से छिपा नहीं कि दिल्ली में कूड़े के पहाड़ बढ़ते जा रहे हैं। इसे लेकर दिल्ली सरकार और नगर निगम के बीच आरोप–प्रत्यारोप तो जारी रहता है, लेकिन इसके कोई आसार नहीं दिखते कि देश की राजधानी को कचरे के पहाड़ों से छुटकारा मिलेगा। स्वच्छता अभियान जारी रहने के बावजूद कचरा निस्तारण में हीलाहवाली और कारखानों से निकलने वाले विषाक्त पानी को नदियों में छोड़ना एक ऐसी समस्या है, जिसका कोई ठोस समाधान होता नहीं दिखता। इसमें संदेह है कि राज्य सरकारों पर जुर्माना लगाने से यह समस्या हल हो जाएगी, क्योंकि न तो कचरे के निस्तारण की कोई कारगर व्यवस्था बन पा रही है और न ही इस पर ध्यान दिया जा रहा है कि सीवेज शोधन संयंत्र सही तरह संचालित हों। यदि स्वच्छता अभियान अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है तो इसके लिए जितनी जिम्मेदार राज्य सरकारें और उनके नगर निकाय हैं, उतना ही लोगों की यह मानसिकता कि कचरे का निस्तारण करना केवल सरकारों की जिम्मेदारी है। यदि गंदगी और प्रदूषण से लड़ना है तो आम नागरिकों से लेकर नगर निकायों को अपनी जिम्मेदारी का सही तरह निर्वाह करना होगा। **– प्रेम शर्मा**

आज का राशिफल

मेष :– उच्चस्तरीय लोगों के सानिध्य से मनोबल मजबूत होगा। किसी महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। शासन–सत्ता से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी।

बृषभ :– अत्याधिक कर्जभार से मन परेशान होगा। कुछ नयी आकांक्षाएं मन को उद्वेलित करेंगी। रोजगार में व्यस्तता संभव। अत्याधिक पारिवारिक जिम्मेदारियां मन को बोझिल करेंगी।

मिथुन :– महत्वपूर्ण दायित्वों की समयानुकूल पूर्ति हेतु मन चिंतित होगा। नई दायित्व अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगे। कानूनी मामलों में कठिनाइयां संभव। तामसिक विचारें पर नियंतग्रखें।

कर्क :– महत्वपूर्ण कार्य के प्रति समुचित साधन व्यवस्था के लिए मन केंद्रित होगा। नई महत्वाकांक्षी योजनाएं बनेंगी किंतु समुचित साधन न होने से पूर्ति में अवरोध होगा। पुराने संबंध के प्रति प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

सिंह :– सगे–संबंधियों के सहयोग से उत्साह का संचार होगा। किसी रचनात्मक कार्य के प्रति रुचि पैदा होगी। पुराने संबंधों के भावनात्मक स्मरण से मन भावुक होगा। राजकीय क्षेत्र कुछ परिवर्तन के आसार बनेंगे।

कन्या :– आलस्य निजी महत्वपूर्ण दावित्वों की पूर्ति में बाधक होगा। मानसिक अवसाद व कार्य–पेशे में अरुचि से आर्थिक संकट की आशंका बनेगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्क रहें।

तुला :– अच्छी कल्पनाएं मन पर प्रभावी होंगी परन्तु अपने मन को लक्ष्य से न भटकने दें। व्यावसायिक क्षेत्र में संबंधों का लाभ उठाएंगे। शिक्षा–प्रतियोगिता की दिशा में प्रयत्न तीव्र होगा।

वृश्चिक :– कार्य–पेशे में कुछ नई तब्दीली रुचिकर लगेगी। वर्तमान स्थिति को देखते हुए भविष्य की चिंता बढ़ेगी फिर भी कुछ नये आसार आत्मबल में वृद्धि करेंगे। घर में खुशहाली रहेगी।

धनु :– समय व स्थिति के साथ अपने स्वभाव में थोड़ा लचीलापन लाने का प्रयास करें। क्षमता से अधिक कार्यों का बोझ से बोझिल होंगे। शिक्षा–प्रतियोगिता के क्षेत्र मे सफलताएं मिलेंगी।

मकर :– आर्थिक सबलता हेतु मन नई युक्तियों पर केंद्रित होगा। कोई अचल सम्पत्ति संबंधी तनाव मन को चिंतित करेगा। पुराने संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। जरूरी कायरे में कतई देरी न करें।

कुंभ :– पारिवारिक दायित्वों की समय से पूर्ति हेतु प्रयत्नशील होंगे। अच्छी सोच का लाभ प्राप्त करेंगे। परिजनों के सुख–दुख के प्रति मन में चिंता होगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य के प्रति चिंताएं समाप्त होंगी।

मीन :– नये संबंधों के साथ आपकी सहज घुलसशीलता प्रशंसनीय है। कार्य को समयानुकूल पूर्ण करने का प्रयत्न करें। बिना वजह दूसरों की अलोचना न करें। आलस्य कतई न करें।

अस्वस्थ हेल्थ बजट

यह चिंता की बात है कि देश के सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य बजट में गिरावट आई है। हालांकि, महामारी के दौर ने केंद्र व राज्य सरकारों को स्वास्थ्य बजट बढ़ाने को बाध्य किया, लेकिन इस बजट में निरंतर वश्द्धि जरूरी है। तभी आम आदमी को राहत मिलेगी। दरअसल, नेशनल हेल्थ अकाउंट के नवीनतम आंकड़ों में खुलासा हुआ कि वर्ष 2004–05 से जीडीपी के अनुपात में स्वास्थ्य बजट में जो लगातार वश्द्धि जारी थी, वह वर्ष 2018–19 में गिरावट दर्ज करती है। पिछले वित्त वर्ष में 1. 35 के मुकाबले 2018–19 में यह 1.28 फीसदी रही। सवाल है कि आर्थिक उन्नति के दावों के बावजूद हमारा स्वास्थ्य बजट क्यों नहीं बढ़ रहा है। कोविड संकट ने केंद्र व राज्य सरकारों को इस बात का अहसास कराया कि पर्याप्त बजट न होने के चलते महामारी के दौरान देश ने बड़ी कीमत चुकाई है। यही वजह है कि इसे स्वास्थ्य आपातकाल मानते हुए केंद्र व राज्य सरकारों ने सेहत की प्राथमिकताओं के चलते अपने बजट को बढ़ाया।

इससे सबक लेकर हमें जीडीपी के मुकाबले स्वास्थ्य बजट में लगातार वश्द्धि करनी चाहिए। यहां सवाल यह भी कि जब वर्ष 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में 2025 तक जीडीपी के अनुपात में स्वास्थ्य बजट 2.5 फीसदी करने का लक्ष्य रखा था तो फिर इस दिशा में ईमानदार प्रयासों में निरंतरता क्यों नहीं नजर आती है। निस्संदेह, देश की तरक्की के अनुपात में स्वास्थ्य सेवाओं का भी विस्तार किया जाना चाहिए। देशवासियों की बेहतर सेहत भी आर्थिक प्रगति का ही सूचक है। वैसे हाल में जारी आंकड़ों का सकारात्मक पक्ष यह भी है कि भारतीयों द्वारा स्वास्थ्य की देखभाल पर जेब से किये जाने वाले खर्च में गिरावट दर्ज की गई है। वर्ष 2004–05 की तुलना में यह वर्ष 2018–19 में कुल राष्ट्रीय व्यय के 70 फीसदी के मुकाबले 48 फीसदी हो गया। इसके मूल में तथ्य यह भी है कि इस अवधि में सरकारी स्वास्थ्य व्यय 22.7 से बढ़कर 40.6 हो गया। बहरहाल, सरकारों को करदाताओं से अर्जित आय को विवेकशील ढंग से खर्च करके स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी जरूरतों को प्राथमिकता देनी होगी। इसमें दो राय नहीं कि चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार शहरों तक ही केंद्रित नहीं होना चाहिए। यदि शहरों में बड़े अस्पताल बनते हैं तो ग्रामीणों को यातायात व रहने–खाने पर अधिक खर्च करना पड़ता है, जिससे उनका स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च बढ़ जाता है। निस्संदेह, बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं हर नागरिक का अधिकार है। सरकारें सुनिश्चित करें कि ग्रामीणों को निकट के कस्बों व शहरों में गुणवत्ता का उपचार मिल सके। साथ ही वे फर्जी डॉक्टरों व नीम–हकीमों के चंगुल से मुक्त हो सकेंगे। इसके साथ ही स्वास्थ्य तंत्र भ्रष्टाचार से मुक्त हो और केंद्र व राज्य स्वास्थ्य बजट में लगातार वृद्धि करते रहें। वहीं यह बात शिद्दत से महसूस की जाती रही है कि ग्रामों व छोटे शहरों में भी विशेषज्ञता का उपचार उपलब्ध हो। जब सरकारें चिकित्सा सेवाओं पर पर्याप्त धन खर्च करती हैं तो मरीजों व उनके तीमारदारों की जेब पर खर्च का दबाव कम होता है। हालांकि, स्वास्थ्य सेवाएं राज्य सूची में शामिल होती हैं लेकिन केंद्र सरकार के बजट व पारदर्शी नीतियों से राज्यों की चिकित्सा गुणवत्ता में सुधार होता है। केंद्र की नीतियां बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के अनुकूल माहौल बना सकती हैं। कोरोना संकट में केंद्र की प्रभावी नीतियों से बेहतर टीकाकरण के लक्ष्य हासिल भी हुए। निस्संदेह, किसी भी लोक कल्याणकारी राज्य की सफलता बेहतर शिक्षा व चिकित्सा सेवाओं पर निर्भर करती है। कोरोना संकट में निजी अस्पतालों ने मरीजों को जिस तरह उलटे उस्तरे से मूंडा, उसको देखते हुए सरकारी चिकित्सा सेवा की जरूरत का बोध होता है। प्राइवेट अस्पतालों का विस्तार हो और उसमें निजी निवेश को बढ़ावा मिले, लेकिन संतुलन के लिये बेहतर सरकारी चिकित्सा सेवाओं का होना भी जरूरी है। केवल स्वास्थ्य बीमा योजनाओं और निजी अस्पतालों के वर्चस्व से आम आदमी को राहत नहीं मिल सकती। केंद्र सरकार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जीडीपी के तीन फीसदी के स्वास्थ्य सेवा पर खर्च के पैमाने के लक्ष्य को हकीकत बनाने के लिये ईमानदार प्रयास करने चाहिए।

आजादी, स्वायत्तता और श्रीमान आजाद

कश्मीर को लेकर, 1947 से ही, दो विरोधी विचार रहे हैं। ये विचार समय–समय पर कई रूपों में बदलते गए, जिससे यह धारणा बनी कि कश्मीर को लेकर दो से अधिक विचार थे। पी. चिदंबरमय कश्मीर को लेकर, 1947 से ही, दो विरोधी विचार रहे हैं। ये विचार समय–समय पर कई रूपों में बदलते गए, जिससे यह धारणा बनी कि कश्मीर को लेकर दो से अधिक विचार थे। दरअसल, दो ही विचार हैं और वे एक–दूसरे का विरोध करते रहते हैं। मूल विचार कश्मीर के इतिहास से जुड़ा है। 26 अक्तूबर, 1947 को कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरि सिंह ने विलय–पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। संविधान सभा ने उस विलय को मान्यता दी थी और कांग्रेस पार्टी ने इसके पीछे के विचार को अपना लिया था। हालांकि कांग्रेस पार्टी ने इन बीच के वर्षों में अपनी स्थिति कुछ कमजोर कर ली, पर जब भी शविशेष दर्जाश को लेकर बात उठी, उसने इस विचार की मूल दृष्टि की पुष्टि की। इसके विपरीत एक विचार की उत्पत्ति श्यामा प्रसाद मुखर्जी के कारण हुई, जो 1947 में जवाहरलाल नेहरू के पहले मंत्रिमंडल के सदस्य थे। आरएसएस और भाजपा सहित उसकी राजनीतिक शाखाओं ने मुखर्जी के उस विचार को अपना लिया। फिर उन्होंने बरस–दर–बरस इसमें इतनी परतें जोड़ीं और इसे इस हद तक विकृत कर दिया कि उन्होंने विलय के दस्तावेज को ही अस्वीकार कर दिया। 5 अगस्त, 2019 को, भाजपा सरकार ने जम्मू और कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त करने का अतिवादी कदम उठाया। राज्य को विभाजित कर दो केंद्र शासित प्रदेश बना दिए गए– जम्मू–कश्मीर और लद्दाख। अगले ही दिन कांग्रेस कार्यसमिति ने एक आपात बैठक बुलाई और एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें निम्नलिखित बातें थींरू सीडब्ल्यूसी इस एकतरफा, निर्लज्ज और पूरी तरह से अलोकतांत्रिक फैसले की निंदा करती है, जिसके तहत संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया गया और संविधान के प्रावधानों की गलत व्याख्या करके जम्मू और कश्मीर राज्य को अलग कर दिया गया। अनुच्छेद 370, जम्मू और कश्मीर राज्य तथा भारत के बीच विलय संबंधी दस्तावेज की शर्तों की संवैधानिक मान्यता है। लोगों के सभी वर्गों के परामर्श के बाद, और सख्ती से भारत के संविधान के अनुसार, इसे संशोधित किए जाने तक अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए। सीडब्ल्यूसी के वरिष्ठ और लंबे समय तक सदस्य रहे गुलाम नबी आजाद भी उस बैठक में उपस्थित थे और उन्होंने प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था। 5 अगस्त, 2019 को सरकार ने 1954 के अनुच्छेद 370 (1) को अधिक्रमित करते हुए उससे मिलते–जुलते एक अनुच्छेद 367 (संविधान की व्याख्या लेख) में एक उपबंध (4) जोड़ दिया। उसी दिन, सरकार ने संसद के समक्ष अनुच्छेद 370 के निरसन के लिए एक प्रस्ताव रखा और संविधान की धारा 370 (3) के तहत दोनों सदनों द्वारा

इसे पारित कर दिया गया था। उसी दिन, सरकार ने राज्यसभा में जम्मू और कश्मीर (पुनर्गठन) विधेयक, 2019 को पेश किया और पारित करवा लिया, जिसमें राज्य को विभाजित किया गया और दो केंद्र शासित प्रदेश बना दिए गए। अगले दिन लोकसभा ने इसे पारित कर दिया। यह कथित तौर पर संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत किया गया था। 6 अगस्त, 2019 को राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 370 (3) के तहत एक अधिसूचना जारी की, जिसमें घोषणा की गई थी कि 6 अगस्त, 2019 से अनुच्छेद 370 के सभी खंड अमान्य करार दिए जाते हैं। उस अधिसूचना में केवल एक नए खंड को छोड़ दिया गया था। सीडब्ल्यूसी के सभी सदस्य इस बात को लेकर मुतमईन थे कि उपरोक्त कदम अवैध और असंवैधानिक थे। उन दो घातक दिनों में सरकार ने जो कुछ भी नहीं किया, उसके लिए किसी भी सदन में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो–तिहाई बहुमत की आवश्यकता थी। आदेश और अधिसूचना कार्यकारी शक्तियों के प्रयोग में जारी किए गए थे, संकल्प और विधेयक को साधारण बहुमत से पारित किया गया था। इन संदिग्ध कदमों को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है। अगर सर्वोच्च न्यायालय किसी भी या सभी कदमों को असंवैधानिक मानता है, तो इन फैसलों को उलट दिया जाएगा। वैकल्पिक रूप से, अगर मोदी सरकार की जगह कोई और सरकार आती है, तो संभव है कि नई सरकार कुछ या सभी चरणों को उलट दे। श्रीमान आजाद निश्चित रूप से यह सब जानते हैं। फिर, उन्होंने ऐसा क्यों कहा कि एक राजनीतिक दल, जो अनुच्छेद 370 को बहाल करने का वादा कर रहा है, वह झूठ बोल और लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहा है, जबकि हकीकत में ऐसा कुछ नहीं करेगा? जो मुद्दा जम्मू–कश्मीर के लोगों के लिए अहम है, वह अनुच्छेद 370 नहीं है। वह विशेष दर्जा है। वह अगस्त, 2019 में अनुच्छेद 370 के निरसन का मुद्दा नहीं है। कश्मीर घाटी के अधिकांश लोग (और जम्मू और लद्दाख में भी इसे लेकर बड़ा समर्थन है) विशेष दर्जे के लिए तरसते हैं, जो कुल मिलाकर राज्य को स्वायत्तता प्रदान करता है और वे चाहते हैं कि जम्मू–कश्मीर हमेशा भारत गणराज्य का अभिन्न अंग बना रहे। लोगों के साथ मेरी कई बातचीत हुई है, जिससे मुझे विश्वास हो गया था कि वे आजादी, स्वतंत्रता या अलगाव की मांग नहीं करते हैं। वे बड़े पैमाने पर स्वायत्तता चाहते हैं। वे पीवी नरसिंह राव (आसमान कोई सीमा नहीं) और अटल बिहारी वाजपेयी (इंसानियत, जम्हूरियत, कश्मीरियत) के शब्दों को याद करते हैं। एक संघ के भीतर किसी राज्य की एक बड़े स्तर पर स्वायत्तता की लालसा रखना कोई असामान्य बात नहीं है। अभी हाल में 12 अगस्त, 2022 को यूएनएचआरसी में भारत ने श्रीलंका को उसी रूप में रखने की सिफारिश की थी। नगा समूह भी सरकार के साथ बातचीत में उसी स्वायत्तता की मांग करते और अड़े रहते हैं। **& ih- fpncje**

दलबदल की दलदल

भारत जोड़ो अभियान की अगुआई कर रहे कांग्रेसी नेतृत्व के लिये खबर चिंता बढ़ाने वाली है कि गोवा में उसके आठ विधायक टूटकर भाजपा में शामिल हो गये। निस्संदेह, इस घटनाक्रम के राजनीतिक निहितार्थ हैं। इसके लिये ऐसे समय को चुना गया जब राहुल गांधी के नेतश्त्व में कन्याकुमारी से कश्मीर तक की भारत जोड़ो यात्रा देश का ध्यान खींच रही है। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि यह सबकुछ स्वस्थ लोकतंत्र के हित में नहीं है। गाहे–बगाहे देश के विभिन्न राज्यों में विपक्षी दलों के विधायकों को येन–केन–प्रकारेण भाजपा में मिलाने की मुहिम से दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को लेकर कोई अच्छा संदेश नहीं जाता। वहीं दूसरी इससे भाजपा की राजनीतिक शैली की विश्वसनीयता को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। यही वजह है कि राजग के कई पुराने सहयोगी दलों ने भाजपा से किनारा कर लिया।

शिवसेना से शुरू हुई इस आशंका से अलगाव की कवायद हाल ही में जदयू के अलगाव के रूप में सामने आयी है। गोवा की तरह विधायकों को भाजपा में शामिल करने का यह खेल पिछले दिनों पूर्वोत्तर राज्यों, कर्नाटक व मध्यप्रदेश में भी देखने में आया। जिसे लोकतंत्र में जनता के विश्वास से छल ही कहा जायेगा कि जनप्रतिनिधि जनता से किसी पार्टी के नाम पर वोट मांगता है और फिर दूसरे राजनीतिक दल की बांह पकड़ लेता है। जिससे विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोगियों में भी अविश्वास बढ़ा है। निस्संदेह,यह घटनाक्रम भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों के पराभव का चित्र भी उकेरता है। जो बताता है कि सत्ता में आने की बेचैनी जनप्रतिनिधियों को किसी भी हद तक ले जा सकती है। फार्म हाउसों और गेस्ट हाउसों में घेर कर ले जाये जाते विधायक इस दयनीय स्थिति को ही उजागर करते हैं। जो राजनीतिक पंडितों के लिये अध्ययन का विषय होना चाहिए कि विपक्ष में बैठने में विधायकों में बेचैनी क्यों होती है और वे स्वार्थों के लिये जनता के विश्वास से छल क्यों करते हैं।

यूं तो देश का राजनीतिक इतिहास बताता है कि केंद्रीय सत्ता में आये राजनीतिक दल धनबल और सरकारी एजेंसियों के जरिये भयादोहन करके विपक्ष को कमजोर करने का उपक्रम करते ही रहे हैं। कांग्रेस पार्टी भी इससे अछूती नहीं रही है। राजनीतिक इतिहास के पन्नों पर नजर डालें तो पता चलता है कि रातों–रात कैसे सरकारें गिराई जाती थी और थोक में राज्यपाल बदले जाते थे ताकि केंद्रीय सत्ता का निष्कंटक मार्ग स्थापित हो सके। राजनीति की इन कुप्रथाओं का विस्तार वर्तमान राजग सरकार के दौर में भी दिखायी दे रहा है। ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग के जरिये विपक्षी नेताओं की कमजोर नस पर हाथ रखा जा रहा है।

यूं तो राजनीति के हमाम में तमाम राजनेता गाहे–बगाहे बेनकाब होते रहते हैं लेकिन विडंबना यह है कि ये राजनेता जब भाजपा में शामिल होते हैं तो पूरी तरह पाक–साफ बन जाते हैं। सवाल यह भी कि क्या सरकारी एजेंसियों को कोई सत्तारूढ़ दल का दागी नेता नजर नहीं आता? जो विगत में विपक्ष में रहते हुए दागदार बताया जाता था। बहरहाल, प्रलोभन व भयादोहन से विपक्ष को कमजोर करने की राजनीति लोकतंत्र के हित में नहीं कही जा सकती। सजग व सशक्त विपक्ष लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त भी है। जो सत्ता पक्ष को निरंकुश होने व भटकने से बचाता है। वहीं कांग्रेस भी आत्ममंथन करे कि वह वैचारिक स्तर पर इतनी कमजोर क्यों हो गई है कि वह अपने पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं को एकजुट नहीं रख पा रही है।

ऐसे वक्त में जब अगले आम चुनाव में समय कम ही रह गया, कांग्रेस को पार्टी में मची भगदड़ को रोकने के लिये गंभीरता से विचार करना होगा। वह सोचे कि पार्टी के बड़े–बड़े दिग्गज नेता पार्टी से किनारा क्यों कर रहे हैं। कहीं पार्टी के भीतर लोकतंत्र कमजोर तो नहीं हुआ है? निस्संदेह कांग्रेस की पदयात्रा आगे बढ़ते हुए देश का ध्यान खींच रही है, लेकिन पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिये अतिरिक्त प्रयास जरूरी हैं अन्यथा पार्टी की विश्वसनीयता का संकट गहराता ही जायेगा।

डॉ. राजेश्वर सिंह ने स्वास्थ्य शिविर का किया शुभारम्भ

डॉक्टर्स के कारण ही देश और प्रदेश सुरक्षित है : डॉ. राजेश्वर सिंह

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 72वें जन्मदिन के अवसर पर देश भर में मनाये जा रहे सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत रविवार को सरोजनी नगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने लोकबंधु राजनारायण संयुक्त चिकित्सालय में स्वास्थ्य सेवा शिविर का शुभारम्भ किया। इस विशाल स्वास्थ्य शिविर में विशेषज्ञों की परामर्श, जांच व दवा, टीकाकरण एवं आयुष्मान कार्ड बनवाने की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई गई। इस अवसर पर सरोजनी नगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा कि डॉक्टर्स के ही कारण देश और प्रदेश सुरक्षित है, लखनऊ के लोग सुरक्षित हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में 36 करोड़ से अधिक कोविड डोज लगाकर उत्तर प्रदेश ने इतिहास रचा है, इसके लिए डाक्टर्स भी बधाई के पात्र है। डॉ. सिंह ने बताया कि कोरोना काल में चिकित्सकों ने जिस प्रकार देश की सेवा की है, उसके लिए लिए उनकी जितनी सराहना की जाए उतनी कम है। आज देश में जेंडर रेशियों सुधरा है प्रति 1000 लड़कों पर लड़कियों का अनुपात 1020 हुआ है तो उसके पीछे भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बेटी

बचाओ– बेटी पढाओ का संकल्प और चिकित्सकों की मजबूत इच्छाशक्ति भी शामिल है। शिशु मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर में सुधार हुआ है, पहले पैदा हुए 1000 बच्चों में से 47 बच्चे पैदा होते ही मर जाते थे अब यह आंकड़ा घटकर 35 हो गया है। उन्होंने आगे कहा कि देश में मातृ मृत्यु दर भी कम हुआ है, इन उपलब्धियों के लिए भी डॉक्टर्स बधाई के पात्र हैं। सरोजनी नगर विधायक ने बताया कि देश और प्रदेश में तेजी से स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हो रहा है, आयुष्मान भारत योजना देशवासियों के लिए वरदान साबित हुई है, गरीब से गरीब लोग भी अपना इलाज निःशुल्क करवा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज बन रहा है, आने वाले समय में प्रदेशवासियों को विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त होंगी। सरोजनी नगर विधायक ने लोकबंधु राजनारायण संयुक्त चिकित्सालय को आदर्श चिकित्सालय बनाने का संकल्प लेते हुए कहा कि अस्पताल में सीटी स्कैन की सुविधा शीघ्र ही प्रारंभ हो रही है और ब्लड बैंक व ट्रामा सेंटर की स्थापना हेतु प्रयासरत हूँ। विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने प्रदेश में बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश की स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. लिली सिंह का आभार व्यक्त किया। निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में उत्तर प्रदेश की स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. लिली सिंह लोकबन्धु चिकित्सालय निदेशक डॉ. दीपा त्यागी एवं ब्लैै.ज्ञ.सक्सेना व अन्य चिकित्सक एवं पैरामेडिकल स्टाफ तथा सरोजनी नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष अनूप मिश्रा, पार्षद प्रतिनिधि सौरभ सिंह मोनू, भाजपा महिला मोर्चा, युवा मोर्चा और अन्य भाजपा पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

लोकबंधु राजनारायण संयुक्त चिकित्सालय में स्वास्थ्य सेवा शिविर का शुभारम्भ करने के पश्चात डॉ राजेश्वर सिंह ने रविवार को केन्द्रीय मंत्री कौशल किशोर के अन्नपूर्णा कॉन्प्लेक्स,आशियाना स्थित संसदीय कार्यालय पर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित निशुल्क स्वास्थ्य शिविर में भी सहभागिता की।

लाइनमैन की करंटडी में मौत मामले में आठ पुलिस कर्मी सस्पेंड

लखनऊ। गोंडा जनपद के थाना परिसर में पूछताछ के दौरान विद्युत लाइनमैन की हुई मौत के मामले में हो रही किरकिरी के बीच एसओजी और थाने में तैनात आठ अन्य पुलिसकर्मियों को लापरवाही बरतने के आरोप में एसपी ने तत्काल प्रभाव से रविवार को निलंबित कर दिया। मामले में नवाबगंज थानाध्यक्ष तेज प्रताप सिंह और एसओजी प्रभारी अमित यादव पूर्व में सस्पेंड किये गये जा चुके हैं।

कुल मिलाकर अब तक इस मामले में दस पुलिसकर्मियों पर गाज गिर चुकी है। एसपी आकाश तोमर के मुताबिक गत 14 सितम्बर को विद्युतलाइन मैन देव नारायण यादव को हत्या के एक मामले में पूछताछ के लिये थाना लाया गया था ,जहां पूछताछ के दौरान तबियत बिगड़ने पर देव को जिला अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मश्त घोषित कर दिया।

उन्होनें बताया कि परिजनों के आरोप पर जांच में प्रकाश में आये दस आरोपियों पर कार्यवाही की गयी है। जांच के दायरे जो भी शख्स आ रहा है उससे पूछताछ की जा रही है।

जनसामान्य के अवलोकन हेतु प्रदर्शनी का आयोजन 23 सितम्बर तक रहेगा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। मा0 सांसद फूलपुर श्रीमती केशरी देवी पटेल ने शनिवार को अखिल भारतीय सरदार पटेल सेवा संस्थान, अलोपीबाग में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0 लखनऊ के सौजन्य से 17 से 23 सितम्बर तक मा0 प्रधानमंत्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा जनकल्याणकारी योजनाओं से सम्बंधित प्रदर्शनी का फीता काटकर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मा0 सांसद जी के साथ मा0 विधायक शहर उत्तरी श्री हर्षवर्धन वाजेपयी, महानगर अध्यक्ष भाजपा श्री गणेश केसरवानी, पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार सिंह गौड़, पूर्व विधायक श्री प्रभाशंकर पाण्डेय, श्री वरूण केसरवानी सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा लगायी गयी प्रदर्शनी की प्रशंसा की। प्रदर्शनी में प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि योजना, उज्जवला योजना, सौभाग्य योजना, निःशुल्क टीकाकरण, हर घर नल योजना, स्वच्छ भारत, सोलर पॉवर पम्प, वाटर ग्रिड, साबरमती रिवर फ्रंट, सरदार सरोवर डैम, ग्लोबल विजन, जल संरक्षण, अमृत

सरोवर, एक भारत श्रेष्ठ भारत, हर घर तिरंगा कार्यक्रम, निःशुल्क टीकाकरण सहित अन्य योजनाओंध कार्यक्रमों से सम्बंधित चित्र प्रदर्शनी आमजनमानस के अवलोकन के लिए लगायी गयी है।

मा0 सांसद जी ने मीडिया से मुखातिब होते हुए कहा कि यह प्रदर्शनी 23 सितम्बर तक लोगो के अवलोकन के लिए लगी रहेगी। उन्होंने लोगो से प्रदर्शनी का अवलोकन कर मा0 प्रधानमंत्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेने एवं सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उससे लाभान्वित होने के लिए कहा। प्रदर्शनी स्थल पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से भी जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार किया गया। इस अवसर पर अपर नगर मजिस्ट्रेट तृतीय श्री अभिनव कनौजिया, राजकीय इण्टर कालेज के प्रवक्ता डॉ0 प्रभाकर त्रिपाठी, जिला सूचना अधिकारी श्री गगन यादव, अपर जिला सूचना अधिकारी श्री ऋषभ देव त्रिपाठी, अपर जिला सूचना अधिकारी श्री राजेश कुमार राय, अम्बुज गर्ग सहित अन्य कर्मचारीगणों के अलावा काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरे

विद्यार्थियों की धार्मिक परीक्षा में सम्मानित हुए बच्चे

लखनऊ। श्री सुखमनी साहिब सेवा सोसाइटी के 51वें वार्षिक समागम से पहले नगर के विभिन्न गुरुद्वारों से आए विद्यार्थियों की धार्मिक परीक्षा का आयोजन हुआ। नाका के श्रीगुरु सिंह सभा गुरुद्वारा में 110 बच्चों ने इस धार्मिक परीक्षा में हिस्सा लिया। चेयरमैन कृपाल सिंह ऐबट ने बताया कि श्री सुखमनी साहिब की बाणी के साथ इसके रचयिता श्रीगुरु अर्जुन देव के जीवन पर प्रश्न पूछे गए, जिसका बच्चों ने उत्तर दिया। सभी को सांत्वना पुरस्कार के साथ प्रथम, द्वितीय और तश्तीय आए परीक्षार्थियों को 21 सौ, 15 और 11 सौ रुपए पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन सोसाइटी के प्रमुख सेवादार सरदार हरमिंदर सिंह मिंदी, बेला भाटिया, रोजी आनंद, रोजी वाधवा, जतिंदर पाल सिंह मंगा, गुरप्रीत कौर बजाज और सुरिंदर कौर डेजी ने किया।

लम्पी वायरस से निपटने में सरकार सजग नहीं : कांग्रेस

लखनऊ। कांग्रेस ने कहा है कि लंपी वायरस में सरकारी आंकड़े और दावों के उलट जमीनी हकीकत में टीकाकरण की स्पीड भी काफी धीमी है। प्रवक्ता विकास श्रीवास्तव ने कहा कि कोरोना संक्रमण से निपटने में की गई गलती से प्रदेश सरकार अब भी सबक नहीं ले रही है। अलीगढ़, मुजफ्फरनगर और सहारनपुर में सबसे ज्यादा मामले सामने आये हैं। वहीं मथुरा, बुलंदशहर, बागपत, हापुड, मेरठ, शामली और बिजनौर के साथ ही बुंदेलखंड और पूर्वांचल के भी जिलों में भी वायरस तेजी से पांव पसार रहा है। सरकार को इस पर तत्काल विषेश एडवाइजरी जारी करना चाहिए। वायरस से प्रभावित पशुओं को अलग रखने की व्यवस्था हो ,पशुओं की मृत्यु हो जाने पर शव को खुले में ना छोड़े।

गौ रक्षा महासंघ ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का मनाया जन्मदिन

लखनऊ। अखिल भारतीय गौ रक्षा महासंघ ने आज यहां राष्ट्रीय मुख्यालय उतरटिया हाउस कैसरबाग के प्रागण में वश्क्षारोपण कर राष्ट्रीय अध्यक्ष कलीम भारतीय का जन्म दिवस मनाया। इस मौके पर महिला प्रदेश अध्यक्ष राकेश श्रीवास्तव, जिला अध्यक्ष संगीता राज, राजेश राज प्रदेश मंत्री, नमकीन चौहान एडवोकेट प्रदेश महामंत्री, अमित शर्मा, राजू भारती, अरुणा श्रीवास्तव, जानकी सिंह, सरिता त्रिपाठी, सुधा सिंह, शकुंतला कुशवाहा, बीना वर्मा, अनीता तिवारी, नीलम मिश्रा आदि लोग उपस्थित थे। इससे पहले कार्यालय में मौजूद लोगों ने केक काटकर महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कलीम भारतीय को शुभकामनायें दी, तत्पश्चात कार्यालय प्रांगण में गौ रक्षा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कलीम भारतीय ने अपनी टीम के साथियों के साथ वश्क्षारोपण किया। इस मौके पर शुभकामनाये देने वालों को धन्यवाद देते हुये कलीम भारतीय ने गौ रक्षा के लिये लोगों से आगे आने की अपील की और कहा कि वह सदैव गाय माता की रक्षा के लिये तत्पर आगे रहेंगे।

24 घण्टे डाकखाने में बंद रहा कुत्ता, कर्मचारियों की लापरवाही उजागर

लखनऊ। लखीमपुर खीरी में पोस्ट ऑफिस की कर्मचारियों की लापरवाही के चलते एक आवारा कुत्ता 24 घंटे से पोस्ट ऑफिस में कैद रहा जिससे मौके पर हड़कंप मच गया। मामला लखीमपुर खीरी के मैलानी कोतवाली क्षेत्र कस्बे का है,जहां पोस्ट ऑफिस में शनिवार को पोस्ट ऑफिस के कर्मचारियों की लापरवाही के चलते एक आवारा कुत्ता पोस्ट ऑफिस के अंदर कैद हो गया। पोस्ट ऑफिस को बाहर से बंद कर दिया गया। शनिवार को कुछ घंटे के बाद कुत्ता पोस्ट ऑफिस के अंदर चिल्लाने लगा लेकिन बाहर से ताला लगे होने के चलते लोग कुत्ते को पोस्ट ऑफिस से बाहर निकालने में असमर्थ रहे कुछ लोगों ने कुत्ते को खाने और पीने की वस्तुएं खिड़की के रास्ते दी। लगभग 24 घंटे तक कुत्ता पोस्ट ऑफिस के अंदर चिल्लाता रहा। आसपास के लोगों ने पोस्ट ऑफिस कर्मचारियों को जब फोन किया तो उन्होंने गोला गोकर्णनाथ से मैलानी आकर पोस्ट ऑफिस के ताले खोलें और कुत्ते को पोस्ट ऑफिस से बाहर निकाला। मौके पर मौजूद किसी शख्स ने पोस्ट ऑफिस बंद कुत्ते का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

चारबाग स्टेशन पर ऑटो-टेंपो की धरपकड़ शुरू

लखनऊ। यात्रियों से मनमाना किराया वसूलने से लेकर बिना परमिट संचालन हो रहे ऑटो–टेंपो के खिलाफ रविवार को चारबाग रेलवे स्टेशन परिसर में चेकिंग अभियान चलाया गया। अभियान की अगुवाई कर रहे यात्रीकर अधिकारी अनिता वर्मा ने बताया कि चेकिंग से बचने के लिए ऑटो–टेंपो स्टेशन के परिसर में आ जाते हैं। यात्रियों की शिकायत पर जांच की गई तो सात ऑटो–टेंपो अनाधिकृत पाए गए। इनका चालान किया गया और चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। इस दौरान एआरटीओ और पीटीओ आभा त्रिपाठी मौजूद रहे।

युवक की हत्या कर फेंका शव,पुलिस ने बताया हादसा तो भड़के परिजन

लखनऊ। लखनऊ के बिजनौर थाना क्षेत्र के गढ़ी मवैया गांव में युवक की हत्या कर शव फेंक दिया गया। युवक का शव सड़क के किनारे गड्ढे में मिला। मामला लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट के मध्य जोन के बिजनौर थाना क्षेत्र का है। जहां गांव में हत्या के बाद युवक का शव फेंका गया।

यूपी के 56 शहरों को मिली मॉर्डन प्रिजन वैन

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 56 शहरों के लिए मॉडर्न प्रिजन वैन को हरी झंडी दिखाई। रविवार सुबह 5 कालिदास आवास के बाहर आयोजित किए गए कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने पुलिस विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में वैन को 56 शहरों के लिए रवाना किया है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा– पुलिस को मॉर्डन बनाने का लक्ष्य को आगे बढ़ाया जा रहा है। पुलिस को आधुनिक किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अब तक जेल से अदालत लाने के लिए जिन वैन का इस्तेमाल होता था। उनसे कैदी या तो भाग खड़े होते थे। यह गिरोहों द्वारा उन पर हमला होता था। ये प्रिजन वैन आधुनिक हैं। 25 करोड़ जनता की सुरक्षा के हित में हम पुलिस विभाग को आधुनिक बना रहे है। सीएम योगी ने कहा कि पिछले 5 वर्षों में पुलिस विभाग के जिस आधुनिकीकरण के लिए हमने कार्य शुरू किया। उसी क्रम में आज ये आधुनिक प्रिजन वैन का शुभारंभ हो रहा है। 25 करोड़ आबादी के सुरक्षा और हित के लिए

हमने पुलिस विभाग को आधुनिक बनाने के लिए अनेक कार्य किया। सीएम योगी ने कहा कि पुलिस भर्ती में 1 लाख,56 हजार निष्पक्ष भर्तियां हुई। साइबर थानों की स्थापना हुई। आज लोग उत्तर प्रदेश के कानून व्यवस्था की चर्चा करते हैं। पहले दंगा फसाद होते थे। पुलिस भाग खड़ी होती थी, आज उसी पुलिस का इकबाल है। परिणामः पुलिस आज सशक्त है। लखनऊ में फोरेंसिक लैब की स्थापना हो रहा है। निवेश की असीम संभावनाएं बनी। पुलिस बल के लिए आवासीय भवनों का निर्माण हो रहा है। सीएम ने कहा अब तक जेल से अदालत लाने के लिए जिन वैन का इस्तेमाल होता था। उनसे कैदी या तो भाग खड़े होते थे। ये प्रिजन वैन आधुनिक हैं। इसमें कैमरे, पैनिक बटन हैं,हाई लॉक सिस्टम है। उत्तरप्रदेश पुलिस बल दुनिया का सबसे बड़ा पुलिस बल है।

चोरी करने वाले गिरोह के तीन सदस्य गिरफ्तार

लखनऊ। बाइक से घूमकर पता पूछने के बहाने दिन में रेकी कर रात में चोरी करने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को मड़ियांव और जानकीपुरम पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपितों में दो भाई शामिल हैं।

आरोपितों से पांच लाख के जेवर, चोरी की हुई पिस्टल व 32 हजार रुपये नगद बरामद हुए हैं। डीसीपी उत्तरी एसएम कासिम आब्दी ने बताया कि नौबस्ता बड़ा खुदान के पास बाइक सवार तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपितों की पहचान मड़ियांव के बड़ा खुदान मूलपता सीतापुर के तालगांव महरानगर निवासी सगे भाई इब्राहिम व मुन्ना उर्फ इमान और शाहिद के रूप में हुई। तलाशी के दौरान उनके कब्जे से एक पिस्टल व दो मैगजीन बरामद हुई। वहीं झोले से करीब पांच लाख के जेवर मिले। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि पिस्टल समेत सभी सामान चोरी का है।

नीतीश की पार्टी के लिए यूपी में कोई जगह नहीं है : भाजपा

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को 2024 में उत्तर प्रदेश से लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए आमंत्रित करने की खबरों के बाद राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि नीतीश कुमार के लिए उत्तर प्रदेश में कोई जगह नहीं है। अपने दम पर, नीतीश कुमार मुश्किल से दो सीट जीत पाए। बाद के चुनावों में उनकी सीट का हिस्सा बढ़ गया क्योंकि वो भाजपा के समर्थन से लड़े।

लेकिन, अब, मोदी के चेहरे के बिना, उनके पास यूपी और यहां तक कि बिहार में भी कोई मौका नहीं है। चीजें मुश्किल हैं। वास्तव में, वह अपना खाता नहीं खोल पाएंगे, मौर्य ने कहा। जद (यू) की रिपोर्ट में कहा गया है कि नीतीश कुमार को मिर्जापुर या फूलपुर लोकसभा सीट से लड़ने के लिए आमंत्रित किया गया है, दोनों जगह कुर्मी आबादी अच्छी है।

मिर्जापुर सीट वर्तमान में केंद्रीय मंत्री और अपना दल प्रमुख अनुप्रिया पटेल के पास है। अपना दल एक कुर्मी–केंद्रित पार्टी है जो भाजपा की सहयोगी है। फूलपुर सीट 2019 में बीजेपी की केशरी देवी पटेल ने जीती थी। गौरतलब है कि केशव प्रसाद मौर्य ने 2014 में बीजेपी के लिए पहली बार फूलपुर लोकसभा सीट जीती।

उपमुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने फूलपुर के सांसद का पद छोड़ दिया और एमएलसी बन गए। नीतीश कुमार कुमार और मौर्य दोनों ही अपनी–अपनी पार्टियों के लिए अपने–अपने राज्यों में ओबीसी नेता हैं और जब से नीतीश कुमार ने बीजेपी को छोड़ा है और सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय जनता दल के साथ समझौता किया, बीजेपी नीतीश कुमार को निशाना बना रही है।

लखनऊ पब्लिक चौरिटेबल ट्रस्ट ने जागरूकता के लिए कराई दौड़

लखनऊ। एलपीएस फाउंडर्स डे के अवसर पर, लखनऊ पब्लिक चौरिटेबल ट्रस्ट की ईकाई गोल 4 ऑल एवं लखनऊ पब्लिक कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज द्वारा, 5 किलोमीटर की क्रॉस कंट्री दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन कठौता झील के सामने किया गया, जिसका फ्लैग ऑफ एडीएम प्रशासन विपिन मिश्रा ने पूर्व एमएलसी कांति सिंह, ट्रस्टी हर्षित सिंह, शिखर पाल सिंह, एलपीएस डायरेक्टर्स नेहा सिंह, गरिमा सिंह, एलपीसीपीएस के डीन डॉव लक्ष्मी शंकर अवस्थी की उपस्थिति में किया। दौड़ में 522 लोगों ने प्रतिभाग लिया स प्रथम पुरस्कार पाने वाले स्पोर्ट्स कॉलेज के सरवन कुमार को रुव 15000, द्वितीय पुरस्कार पाने वाले स्पोर्ट्स कॉलेज के ही शाहरुख खान को रुव 10000, तृतीय स्थान पाने वाले उत्तर प्रदेश पुलिस के धावक बलराम को रुव 5000 तथा चौथे से दसवें स्थान को प्राप्त करने वाले प्रत्येक प्रतिभागियों को 15 सौ रुपए के चेक व ट्राफी के साथ प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डोनेशन ड्राइव का भी आयोजन किया गया, मुख्य अतिथि प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष सिंह पटेल तथा लखनऊ पब्लिक स्कूल्स एण्ड कॉलेजेज के संस्थापक व महाप्रबंधक व मैनेजिंग ट्रस्टी डॉक्टर एस पी सिंह, पूर्व एमएलसी कांति सिंह एवं ट्रस्टी हर्षित सिंह और शिखर पाल सिंह द्वारा समाज सेवा करने वाली चार संस्थाओं के पदाधिकारियों , चौतन्य वेलफेयर फाउंडेशन की फाउंडर एवं चीफ सेक्रेटरी ओम कुमारी सिंह, पावर विंग्स फाउंडेशन की फाउंडर प्रेसिडेंट सुमन सिंह रावत, श्रीराम औद्योगिक अनाथालय की सुपरिंटेंडेंट श्रुति पांडेय एवं जय जगत एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी के संस्थापक सचिव रामदयाल मौर्या को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं शाल देकर सम्मानित भी किया गया स इन संस्थाओं को लखनऊ पब्लिक चौरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एकत्र की गई खानपान की सामग्री, पुस्तकें, स्टेशनरी एवं कपड़े, जरूरतमंदों तक पहुंचाने के लिए भेंट किए गए।

पूर्व सांसद की पत्नी समेत तीन के खाते से 10 लाख उड़ाए

लखनऊ। साइबर जालसाजों ने पूर्व सांसद की पत्नी समेत तीन लोगों के खाते से 9.87 लाख रुपये उड़ा लिए। पीड़ितों की तहरीर पर गोमतीनगर, बाजारखाला व सरोजनीनगर पुलिस मुकदमा दर्ज कर साइबर क्राइम सेल की मदद से जांच पड़ताल कर रही है। गोमतीनगर विशालखण्ड निवासी सुल्तानपुर के पूर्व सांसद जयभद्र सिंह की पत्नी आशा सिंह के मुताबिक फोन पे के माध्यम से जालसाज ने उनके खाते से शनिवार को 8 लाख रुपये पार कर दिए। वहीं, बाजारखाला मोहान रोड निवासी गिरधर राय चौधरी के मुताबिक एसबीआई क्रेडिट कार्ड का भुगतान करते समय जालसाज ने 151999 उड़ा लिए। वहीं सरोजनीनगर के हाउसिंग सोसायटी निवासी धरनी धर जोशी के मुताबिक वह हाइडिल के पास स्थित केनरा बैंक के एटीएम बूथ पर रुपये निकालने गए थे।

यूपी में दो दिन बाद फिर होगी बारिश,लखनऊ में सुबह दिखी कोहरे जैसी धुंध

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। यूपी में अब दो दिन बाद यानी 21 सितंबर से फिर बारिश हो सकती है। आज से 3 दिन तक मौसम सामान्य रहेगा। हालांकि, एक्सपर्ट का कहना है कि मानसून अभी लौटा नहीं है। अगले फेज में यानी 21 सितंबर के बाद तीन–चार दिन बारिश का एक दौर और आ सकता है। उधर, लखनऊ में रविवार सुबह कोहरे जैसी धुंध देखने को मिली। सर्दी जैसे मौसम का अहसास हुआ। सुबह 6.30 बजे तक इतनी धुंध थी कि 100 मीटर से आगे का पूरी तरह विजिबल नहीं दिख रहा था। 7 बजे के बाद हल्की धूप निकली तो मौसम साफ हुआ। प्रदेश में बीते 24 घंटे में 15.1 मिलीमीटर औसत बारिश हुई। यह अनुमान से 202: ज्यादा थी। मानसून शुरू होने से अब तक 442.3 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की जा चुकी है। हालांकि, अनुमान था कि 703.1 मिलीमीटर

बारिश होगी। यानी, ओवरऑल बारिश अभी बहुत कम हुई है। लगातार बारिश से पारे में भी गिरावट हुई है। प्रदेश में औसत तापमान 34 से0 से 27से0 तक पहुंच गया। बारिश थमने से उमस ने एक बार फिर परेशान करना शुरू कर दिया है। बीते 4 दिनों में प्रदेश में हुई बरसात का असर दिख रहा है। रविवार सुबह ठंडक महसूस हुई। मेरठ में रविवार सुबह हल्की धूप खिली। कभी आसमान में बादल तो कभी हल्की धूप निकल रही है। 15 और 16 सितंबर को हुई बारिश के बाद अब मौसम साफ है। मौसम विभाग का कहना है कि रविवार को भी बूंदाबांदी के आसार हैं। मौसम विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एम शमीम ने बताया कि मेरठ, बागपत, बुलंदशहर, नोएडा, गाजियाबाद, हापुड़ और आसपास के जिलों में बूंदाबांदी हो सकती है। सोमवार को अधिकतम तापमान 29से0 और न्यूनतम तापमान 23से0 रहेगा।

विधानसभा में शिवपाल यादव को नहीं मिलेगी आगे की सीट, अखिलेश यादव की मांग हुई खारिज

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव को समाजवादी पार्टी मुखिया अखिलेश यादव की चिट्ठी के आधार पर विधानसभा में आगे की सीट नहीं मिलेगी, सपा को बता दिया गया है कि शिवपाल को सिर्फ समाजवादी पार्टी के विधायक के तौर पर ही सीट मिल सकती है। बता दें कि बीते दिनों चाचा भतीजे में चल रहे रार के बीच अखिलेश यादव ने विधानसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर अपने चाचा शिवपाल सिंह यादव को मानसून सत्र के दौरान सदन में विपक्ष की अगली सीट पर बैठाने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया था। सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया था कि विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को विधानसभा अध्यक्ष को लिखे एक पत्र में शिवपाल को सदन में आगे की सीट

पर बैठाने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया है राज्य विधानमण्डल का मानसून सत्र 19 सितंबर को शुरू होना है। पत्र लिखने का कारण पूछे जाने पर चौधरी ने कहा कि शिवपाल यादव सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्यों में से हैं इसलिए सम्मान स्वरूप उन्हें आगे की बेंच पर बैठाया जाना चाहिए। विधानसभा चुनाव के बाद अखिलेश और शिवपाल के बीच तल्खियां बढ़ने के बीच इस घटनाक्रम के राजनीतिक मायने निकाले जाने के सवाल पर सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा, इसका कोई राजनीतिक अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए। शिवपाल यादव सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं सिर्फ इसीलिए उन्हें आगे की सीट पर बैठाने का अनुरोध किया गया है। हालांकि विधानसभा अध्यक्ष कार्यालय ने ऐसा कोई भी पत्र प्राप्त होने की पुष्टि नहीं की है। गौरतलब है कि शिवपाल यादव ने अपने भतीजे सपा प्रमुख अखिलेश यादव से तल्खियां बढ़ने के बाद अगस्त 2018 में प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया का गठन किया था। मगर इस साल के शुरू में हुए राज्य विधानसभा चुनाव में उन्होंने अपनी पार्टी के बजाय सपा के टिकट पर जसवंत नगर सीट से चुनाव लड़ा था जिसमें उन्हें जीत हासिल हुई थी। बाद में विधानसभा चुनाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिलने पर आयोजित सपा विधायकों की समीक्षा बैठक में शिवपाल को नहीं बुलाया गया था जिससे वह फिर नाराज हो गए थे। उसके बाद से दोनों के बीच दूरियां फिर बढ़ गई थीं। शिवपाल ने राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष के उम्मीदवार के बजाय भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू को वोट दिया था।

क्रिएटिव राइटिंग प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार सीएमएस छात्रों को

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, राजाजीपुरम (प्रथम कैम्पस) के दो मेधावी छात्रों लमीह रजा एवं शाह मोहम्मद उमर फारूकी अन्तर–विद्यालय क्रिएटिव राइटिंग प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार अर्जित कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। यह प्रतियोगिता एसोसिएशन ऑफ स्कूल्स फॉर इण्डियन स्कूल सार्टिफिकेट (ए. एस.आई.एस.सी.) के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। यह जानकारी सी.एम.एस. के मुख्य जन–सम्पर्क अधिकारी हरि ओम शर्मा ने दी है। श्री शर्मा ने बताया कि इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत लमीह रजा ने सीनियर कैटगरी में 'टेक्नोलॉजी क्रिएट्स मोर जॉब दैन इट एलीमिनेट्स' विषय पर अपनी लेखन प्रतिभा का परचम लहराकर प्रथम पुरस्कार अर्जित किया जबकि शाह मोहम्मद उमर फारूकी ने सब–जूनियर कैटेगरी में 'स्मार्टर गैजेट्स मेक माइंड डम्ब' विषय लेखन कर प्रथम पुरस्कार जीता। इस प्रतियोगिता में लखनऊ के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग कर अपनी लेखन प्रतिभा का प्रदर्शन किया तथापि कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच सी.एम.एस. के इन होनहार छात्रों ने न सिर्फ अपनी रचनात्मक सोच व लेखन क्षमता की छाप छोड़ी अपितु अंग्रेजी भाषा में अपने ज्ञान का भी शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के आयोजकों ने सी.एम.एस. छात्रों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। सी.एम.एस. संस्थापक डा. जगदीश गाँधी ने विद्यालय के इन प्रतिभाशाली छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना की है। श्री शर्मा ने बताया कि सी.एम.एस. अपनी छात्रों को इस प्रकार की रचनात्मक प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग हेतु सदैव प्रेरित करता है, जिससे न सिर्फ उनका ज्ञानवर्धन हो अपितु आत्मबल भी बढ़े। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप सी.एम.एस. छात्र विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतियोगिताओं में अपनी बहुमुखी प्रतिभा की छाप छोड़कर विद्यालय का गौरव बढ़ा रहे हैं तथापि अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय के शान्तिपूर्ण व आध्यात्मिक वातावरण एवं अपने विद्वान शिक्षकों को देते हैं।

संविधान की जानकारी हो तभी लोकतंत्रीय गणतंत्र का मजबूत किया जा सकता है : प्रदीप सारंग

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। डा भीमराव अम्बेडकर मेमोरियल सेवा समिति एवं पार्क, स्मारक अनुरक्षण समिति द्वारा जय हिन्द इंटर कालेज आवास विकास बाराबंकी में हम और हमारा संविधान विषय पर आयोजित सेमिनार में संविधान की प्रस्तावना पर व्याख्या हुई और प्रस्तावना के पहले वाक्य हम भारत के लोग की व्याख्या करते हुए मुख्य वक्ता पूर्व आईपीएस अधिकारी अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि भारत एक प्रजातांत्रिक देश है तथा भारत के लोग ही सर्वोच्च संप्रभु है, अतः भारतीय जनता को जो अधिकार मिले हैं वही संविधान का आधार है। श्री वर्मा ने कहा कि हमारा संविधान भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा इसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता तथा अखंडता

सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्पित है। श्री वर्मा ने कहा कि वर्तमान परिदृष्य में पंथ निरपेक्ष, समता, बंधुत्व और व्यक्ति की गरिमा की परिभाषा बदलती जा रही है, भारत का संविधान धर्म से सत्ता संचालित करने की इजाजत नही देता है। सत्ता सभी धर्मों का सम्मान करेगी और इसलिए संविधान में धर्मनिरपेक्ष की व्याख्या की गई है। भारत के हर नागरिक की गरिमा है और उसे समान अवसर मिलने का हक है। विकास और अवसर पाने के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति, जिनकी ज्यादा संख्या है, उनके उत्थान को ध्यान में रखकर सत्ता का संचालन करने की अनुमति संविधान दे रहा है। विडम्बना है कि आज कुछ पूंजीपतियों को ध्यान में रखकर सत्ता का संचालन हो रहा है। उप्र शासन के पूर्व संयुक्त सचिव भगवती प्रसाद यादव ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में लोकतांत्रिक शब्द का इस्तेमाल वृहद् रूप से किया गया है, जिसमें न केवल राजनीतिक लोकतंत्र बल्कि सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र को भी शामिल किया गया है। व्यस्क मताधिकार, समाजिक चुनाव, कानून की सर्वोच्चता, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, भेदभाव का अभाव भारतीय राजव्यवस्था के लोकतांत्रिक लक्षण के स्वरूप हैं। इसे मजबूत रखने की जिम्मेवारी जनता और सत्ता दोनों की है।

साहित्यकार प्रदीप सारंग ने कहा कि देश संविधान से चलता है, देश की सत्ता संविधान से चलती है, संविधान क्या है, क्या है उसके प्रावधान इसकी जानकारी आम जनमानस को होनी चाहिए तभी लोकतंत्रीय गणतंत्र का मजबूत किया जा सकता है। बार एशोसियेशन के अध्यक्ष नरेन्द्र वर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता व्यक्ति के विकास के लिये अवसर प्रदान करता है। लेकिन स्वतंत्रता के अधिकार का इस्तेमाल संविधान में लिखी सीमाओं के भीतर ही किया जा सकता है। बार के पूर्व अध्यक्ष रघराज वर्मा ने कहा कि आज हर घरों में संविधन की पुस्तक होनी चाहिए, जिस तरह लोग रामायण और हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं, उसी तरह घरों में बच्चों के साथ सविधान का पाठ करना चाहिए।

सफर के दौरान बिहार के महिला यात्री की मौत

बस्ती। मुंबई से चलकर बरौनी जाने वाली अवध एक्सप्रेस में महिला यात्री की मौत हो गई। वह फिरोजाबाद से ट्रेन में सवार हुई थी। गोंडा आरपीएफ की सूचना पर बस्ती स्टेशन पर जीआरपी ने शव को उतारा और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ट्रेन संख्या 19037 अवध एक्सप्रेस ट्रेन में बेलवा थाना पलनथ जिला पूर्वी चंपारण बिहार निवासी मकसूद मियां अपनी पत्नी जरीना खातून (55) के साथ फिरोजाबाद में कोच संख्या एस–2 में बैठे। उनके पास वेटिंग टिकट था। पति मकसूद के अनुसार कानपुर इटावा के बीच जरीना की तबीयत बिगड़ने लगी। कुछ देर बाद हाथ पांव स्थिर हो गए। ट्रेन में आरपीएफ स्क्वायड ने गोंडा आरपीएफ को सूचना दी। तब तक ट्रेन गोंडा से आगे निकल गई। आरपीएफ गोंडा ने सूचना जीआरपी बस्ती को दिया। जीआरपी बस्ती ने रविवार को 10 बजे बस्ती के प्लेटफार्म चार पर रुकी ट्रेन से महिला यात्री को मृत हालत में उतारा। पति ने बताया कि महिला पहले से शूगर पेशेंट है और उसकी दवा चल रही थी। सीने में दर्द हुआ और अचानक शरीर काम करना बंद कर दिया।

विधायक ने सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का किया उद्घाटन

प्रयाग दर्पण संवाददाता

गोण्डा। कर्नलगंज तहसील अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कर्नलगंज तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परसपुर में आयोजित हुए सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का क्षेत्रीय विधायक अजय सिंह ने फीता काटकर उद्घाटन किया। कार्यक्रम के दौरान से सीएचसी कर्नलगंज पहुंचे क्षेत्रीय विधायक का जोरदार स्वागत हुआ, वहीं सीएचसी अधीक्षक डॉ मुदस्सिर ने विधायक को फूल माला पहनाकर उन्हें स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। जिसके बाद सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रीय विधायक के साथ दर्जनों भाजपा के पदाधिकारी भी मौजूद रहे, जिन्होंने कार्यक्रम में हिस्सा ले सरकार की मंशा के अनुरूप कार्य करने के लिए डॉक्टरों तथा स्वास्थ्य कर्मियों को प्रेरित किया। शासन के निर्देशानुसार आज से शुरू हुए सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराकर उन्हें हर तरह की सहायता प्रदान करना है। जिसको लेकर आज कर्नलगंज क्षेत्र के विधायक अजय सिंह

भाजपा पदाधिकारियों के साथ सर्वप्रथम सीएचसी कर्नलगंज पहुंचे, जहां अधीक्षक डॉ मुदस्सिर समेत स्वास्थ्य कर्मियों ने विधायक का जोरदार स्वागत किया। जिसके बाद विधायक ने फीता काटकर कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। कार्यक्रम के दौरान विधायक ने सीएचसी में कार्यरत स्वास्थ्य कर्मियों से मुलाकात कर उनका हाल जाना, साथ ही विधायक ने उन्हें किसी भी तरह की समस्या होने पर तुरंत अवगत कराने को कहा। वहीं सीएससी में मौजूद मरीजों तथा गर्भवती महिलाओं के पास जाकर विधायक ने उनका कुशल क्षेम जाना, तथा मरीजों को फल वितरित उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना भी की। सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान विधायक ने कर्नलगंज व परसपुर सीएचसी में कार्यक्रम का शुभारंभ कराया, साथ ही स्वास्थ्य विभाग में जो कमियां थी उसको लेकर उन्होंने शासन स्तर तक कार्रवाई कराने का आश्वासन दिया।

संक्षिप्त खबरे

बरसात से सरयू उफनाई, गांवों में घुसा पानी

बहराइच। तराई के साथ ही नेपाल के पहाड़ों पर हो रही भारी बारिश से सरयू एक बार फिर उफना गई है। इससे मिहींपुरवा के कई गांवों में पानी घुस गया है। खेतों में भी पानी भरने से किसानों को फसलें बर्बाद होने का डर सता रहा है। मिहींपुरवा तहसील क्षेत्र के मंझरा के मेवालालपुरवा, बनियनपुरवा, दो भजोरेगौढ़ी के चहलवा, टीलवा, खैरीपुरवा, बेरीघाट, मौरहवा, आनंद नगर, नई बस्ती, गुप्तापुरवा, जयश्री पुरवा, रामपुर, रेतिया व संपतपुरवा सहित दो दर्जन गांवों में पानी घुसा गया है।

वहीं, कई मकान कटान की चपेट में भी हैं। संपर्क मार्ग डूब गए हैं जिससे ग्रामीणों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि उन्हें बचाने के लिए उचित व्यवस्था नहीं की गई है। गन्ने की फसल के बाद अब धान भी बर्बाद होने की कगार पर है। प्रभावित ग्रामीणों ने प्राथमिक विद्यालयों व पंचायत भवनों में शरण ले रखी है।

ग्राम भरथापुर के ग्रामीणों ने बताया कि प्रशासनिक अधिकारी निरीक्षण के लिए आते हैं, लेकिन कोई मदद उपलब्ध नहीं कराई जा रही है। ग्राम प्रधानों के सहयोग से कुछ नावों की व्यवस्था की गई है जिससे ग्रामीण गृहस्थी का सामान लेकर सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन कर रहे हैं।

घर में घुसकर मारपीट व छिनैती का केस दर्ज

बहराइच। चार हमलावरों ने एक घर में घुसकर महिला से मारपीट की। उसके साथ छेड़छाड़ करते हुए सोने के जेवर छीनकर फरार हो गए थे। इस मामले में तहकीकात के बाद केस दर्ज कर लिया गया है। बलहा संवाद के अनुसार नानपारा कोतवाली के एक गांव में 11 सितम्बर की शाम पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही चार हमलावर घर में घुसकर महिला के साथ मारपीट करने लगे। विरोध पर छेड़छाड़ की। महिला के शोर पर जब तक लोग दौड़े। हमलावर उसके गले से सोने की जंजीर, कान के बाला, नाक की कील छीन कर धमकी देकर फरार हो गए। शनिवार शाम पीड़िता की तहरीर पर घर में घुसकर मारपीट, छेड़छाड़, धमकी की धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है ।

फंदे से लटक कर किशोरी ने की खुदकुशी

बस्ती। कलवारी थाना क्षेत्र के रुदउपुर गांव में 17 वर्षीय किशोरी ने फंदे से लटक कर खुदकुशी कर ली। किशोरी के भाई दीपक की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। जानकारी के अनुसार रविवार सुबह 9. 30 बजे किसी काम से घर के अंदर जाने पर परिवार के लोगों ने देखा कि जसोमती फंदे से लटकी है। पुलिस फोर्स व फील्ड यूनिट के साथ मौके पर पहुंचे कलवारी के थानाध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह ने जांच की। क्षेत्राधिकारी विनय सिंह चौहान ने भी मौका मुआयना किया। थानाध्यक्ष ने बताया कि जमोमती के भाई दीपक की तहरीर पर शव को कब्जे में लेकर नियमनुसार कार्रवाई की गई। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है। प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत होता है, मगर पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद स्थिति और स्पष्ट हो जाएगी।

26 अक्टूबर को कलश यात्रा के साथ शुरू कार्यक्रम

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। अखिल विश्व गायत्री परिवार के उप जोन कार्यालय की बैठक रविवार को गायत्री शक्तिपीठ राम सनेहीघाट में सम्पन्न हुई। बैठक में ट्रस्टी एवं कार्यकर्ताओं ने होत हुऐ युग–निर्माण योजना और शांतिकुंज द्वारा 26 अक्टूबर को कलश यात्रा के अवसर पर क्रियान्वित योजनाओं के सापेक्ष किए गए कार्यों की आख्या प्रस्तुत की। गृहे–गृहे यज्ञ, पौधरोपण एवं घर–घर गंगाजल स्थापना की जानकारी दी गई। अध्यक्षता व्यवस्थापक शिवा कांत त्रिपाठी ने की। इस अवसर पर राम बाबू मिश्रा, सुरेंद्र बहादुर सिंह, रिशू गुप्ता, अशोक गुप्ता, बृजेश कुमार, राणा सिंह, प्रमोद सिंह, राम किशुन, शिव शंकर कशोधन आदि उपस्थित रहे।

सर्पदंश से महिला की हालत गंभीर

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। सर्पदंश से महिला की हालत गंभीर होने पर सीएससी से जिला अस्पताल रिफर किया। जहाँ से गंभीर स्थिति को देखते हुए राजधानी लखनऊ राम मनोहर लोहिया रिफर किया गया है। गौरतलब हो कि क्षेत्र के ग्राम रामपुर राय साहब निवासी कल्लू की पत्नी 38 वर्ष सावित्री को आज अपराहन घरेलू काम करते हुए सर्प ने काट लिया। सीएचसी बनीकोडर ले गए जहां से चिकित्सकों द्वारा स्थिति गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल रिफर किया जिला मुख्यालय चिकित्सकों द्वारा लोहिया हॉस्पिटल के लिए रेफर किया गया है।

आपसी सद्भभाव, सौहार्दपूर्ण व हर्षोल्लास के साथ मनाये त्योहार : उपजिलाधिकारी

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी एपी सिंह की अध्यक्षता एवं उपजिलाधिकारी विजय कुमार त्रिवेदी की उपस्थिति में क्षेत्र के समस्त प्रधान एवं जनप्रतिनिधियों की पीस कमेटी की बैठक कोतवाली रामसनेहीघाट परिसर में आयोजित हुई। जिसमें अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी श्री सिंह ने संबोधन करते हुए सभी समुदाय के लोगों से अपील किया कि आपसी सद्भभाव एवं सौहार्दपूर्ण बना कर आगामी त्योहार का आयोजन हर्षोल्लास से करे।

पुलिस कस्टडी में बिजली कर्मचारी की मौत का मामला,एसपी ने 8 पुलिसकर्मियों को किया सस्पेंड

प्रयाग दर्पण संवाददाता

गोण्डा। गोंडा के नवाबगंज थाना में बीते दिनों पुलिस कस्टडी में हुई बिजली कर्मचारी की मौत मामले में एसपी ने कार्रवाई की है। एसपी आकाश तोमर ने घटना के समय थाने में मौजूद 8 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है। साथ ही उनके खिलाफ विवेचक को कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। एसपी आकाश तोमर ने यह भी निर्देश दिया है कि जांच में जिन 10 पुलिसकर्मियों को अब तक निलंबित किया जा चुका है। उनकी भूमिका की भी जांच गहराई से की जाए। एसपी ने सर्विलांस सेल में तैनात उपनिरीक्षक आलोक,नवाबगंज थाने में तैनात हेड कांस्टेबल मिथिलेश सिंह, नवाबगंज थाने में तैनात आरक्षी धर्मेंद्र,आरक्षी मनोज, एसओजी टीम गोंडा में तैनात हेड कांस्टेबल राकेश सिंह, हेड कांस्टेबल अरुण यादव, आरक्षी आदित्य पाल, आरक्षी अमित पाठक को निलंबित कर दिया है। निलंबित किए गए यह सभी पुलिसकर्मी घटना के समय नवाबगंज

थाने में मौजूद थे। वहीं पुलिस अधीक्षक आकाश तोमर ने प्रभारी साइबर सेल में तैनात संतोष कुमार सिंह को प्रभारी स्वाट(एसओजी) और सर्विलांस का अतिरिक्त प्रभार दिया है। बीते 15 सितंबर को पुलिस कस्टडी में बिजली कर्मचारी की मौत के बाद बवाल हो गया। ग्रामीणों ने नवाबगंज मार्ग पर शव रखकर जाम लगा दिया। पुलिस के खिलाफ नारेबाजी की। पत्थरबाजी कर पुलिस की गाड़ियों में जमकर तोड़फोड़ की। साथ ही एंबुलेंस को भी पलट दिया। सूचना मिलते ही डीएम और एसपी मौके पर पहुंचे। वे युवक के परिजनों और ग्रामीणों को समझाने में जुटे लगे थे। हंगामे को देखते हुए प्रशासन ने नवाबगंज मार्ग को हंगामा स्थल से 25 किमी दूर से डायवर्ट कर दिया था। मामले में लापरवाही बरतने पर नवाबगंज थानाध्यक्ष तेज प्रताप सिंह, एसओजी प्रभारी अमित यादव को सस्पेंड कर दिया गया था।

बारिश मापी यंत्र खराब, अयोध्या के सहारे चल रहा काम

बस्ती। मंडल मुख्यालय होने के बावजूद यहां बारिश मापी यंत्र (रेन गेज) नहीं है। जिले में कितनी मिली मीटर बारिश हुई इसकी रिपोर्ट के लिए आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय अयोध्या पर निर्भर रहना पड़ता है।

पहले औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र परिसर में लगे यंत्र से बारिश का अंदाजा लग जाता था, लेकिन यंत्र खराब होने के बाद अयोध्या के सहारे रहना पड़ता है। चारों तहसीलों में नियमानुसार रेन गेज होना चाहिए। यंत्र न होने से कृषि और उद्यान विभाग सूने पड़े हैं। कृषि क्षेत्र में नवीनत तकनीकों की खोज और खेती में नए प्रयोग के लिए विख्यात कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में रेन गेज यंत्र ही नहीं लगा है। बंजरिया में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र को देश में सर्वश्रेष्ठ होने का खिताब मिल चुका है। ऐसे में किसान को बारिश की सटीक जानकारी नहीं मिल पा रही है।

जन समस्याओं पर भड़के पूर्व सांसद डाक्टर निर्मल खत्री

अयोध्या। कांग्रेस पार्टी से पूर्व सांसद डॉ निर्मल खत्री ने नगर निगम वार्डों में कई महीनों से सड़कों को खोदकर उनकी मरम्मत न किए जाने पर नाराजगी जताई है। उपूजींने कहा, नवरात्र और दीपावली के त्यौहार जल्द होने वाले हैंस इसके बावजूद निगम रवैया गैर जिम्मेदाराना है। निर्मल खत्री ने कहा सीवर लाइन पाइप डालने के लिए खोदी गई सड़कों के कारण आम शहरी का आना जाना मुहाल हो गया है। महानगर पालिका को

संवेदनशील बनने की सलाह देते हुए कहा महानगर पालिका को आम आदमी के दुख दर्द को समझना चाहिए। जिला कांग्रेस प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने कहा विकास के बड़े–बड़े दावे करने वाली भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में आम शहरी बड़े रेट पर नगर पालिका को टैक्स देने के लिए बाध्य किया गया। महा नगर पालिका जैसी कोई भी सुविधा प्राप्त यूजींी हो रही। कई बार अधिकारियों को वार्डों में व्याप्त समस्याओं से अवगत कराया गया पर महानगर पालिका के कान में जूं यूजींी रेंग रहा। जिला प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने महा नगर पालिका प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा त्योहारों के पहले यदि सड़कों का निर्माण और वार्ड की समस्याओं का निराकरण यूजींी किया जाता तो कांग्रेस पार्टी नगर पालिका का घेराव करेगी।

आर्गेनिक इण्डिया प्रा०लि० को सर्वश्रेष्ठ उद्यमी पुरस्कार से मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित

ckjkcdhA भगवान विश्वकर्मा के जयन्ती के अवसर मुख्यमंत्री उ0प्र0 ने लखनऊ स्थित–लोक भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदेश के विभिन्न जनपदों के अग्रणी उद्यमियों को एम0एस0एम0ई0 प्रादेशिक पुरस्कार तथा श्रेष्ठ हस्तशिल्पियों को विशिष्ट प्रादेशिक पुरस्कार से प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये 126 उद्यमियों को सम्मानित किया गया। विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के अन्तर्गत कारीगरों को टूलकिट का भी वितरण किया गया।

प्रदेश स्तर के इस कार्यक्रम में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग के कैबिनेट मंत्री राकेश सचान, अपर मुख्य सचिव अमित मोहन प्रसाद एवं आयुक्त एवं निदेशक उद्योग मयूर माहेश्वरी तथा विभिन्न जिलो से आये हुये उद्यमीगण एवं अधिकारी गण उपस्थित रहे।इसी क्रम में जनपद बाराबंकी से मे0 आर्गेनिक इण्डिया प्रा0लि0, के प्रबन्ध निदेशक बलराम सिंह को फूड उत्पाद हेतु, सर्वश्रेष्ठ उत्तर प्रदेश उद्यमी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

मे0 गणपति एग्रीबिजनेस प्रा0लि0 के निदेशक अतुल कुमार सिंह को फूड उत्पाद के क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, तथा मे0 अली अफजल फ्लोर मिल के प्रबन्धक कुलदीप को एम0एस0एम0ई0 के अन्तर्गत विशिष्ट फूड उत्पाद के क्षेत्र में पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। उक्त के अतिरिक्त हस्तशिल्प की श्रेणी में जैनुल आब्दीन को हार्न बोन से निर्मित कलाकषति हेतु राज्य हस्तशिल्प पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे प्रदेश में 23 सितंबर 2022 से 25 सितंबर 2022 तक वोकल फॉर लोकल के अन्तर्गत आयोजित होने वाले ओ0डी0ओ0पी0 एवं हस्तशिल्प प्रदर्शनी में प्रतिभाग करने वाले समस्त उद्यमियों को अग्रिम बधाई एवं शुभकामनायें भी दी।

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन राज्य मंत्री ने किया

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित सेवा पखवाड़े के तहत आज सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामसनेहीघाट में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार राज्य मंत्री सतीश चन्द्र शर्मा के कर कमलों द्वारा किया एवं रोगियों को फल वितरित किया।

इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डाक्टर अमरेश वर्मा, डा. रईस खान, जिला उपाध्यक्ष पवन सिंह रिंकू, मंडल अध्यक्ष विवेक तिवारी, प्रदीप द्विवेदी, जिला पंचायत सदस्य अभिषेक वर्मा, सुरेंद्र कौसल, विनीत श्रीवास्तव, दीपक वर्मा, नीरज सिंह, मधुकर तिवारी, हरीओम तिवारी, अजय वर्मा, राजा वर्मा, यश तिवारी सहित पार्टी पदाधिकारी एवं समस्त सम्मानित चिकित्सक उपस्थित रहे।

साफ–सफाई, स्वच्छता का महत्व बता व केक काट कर मनाया प्रधानमत्री का जन्मदिन

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 72वाँ जन्मदिन काफी जोशओं खरोश से मनाया गया। भाजपा के वरिष्ठ नेता और सदस्य उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी राजा कासिम के आवास पीरबटावन में शानदार आयोजन किया गया। आलिसा शमीम के साथ अन्य महिलाओं ने केक काटा और प्रधानमंत्री के दीर्घायु की कामना की। तत्पश्चात शहर को स्वच्छ रखने वाले वाल्मीकि समाज की मोहल्ले में राजा कासिम के नेतृत्व में लोगो ने साफ–सफाई की और स्वच्छता का महत्व बताया। इस अवसर पर गोश्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मो0 अलील ने की। मुख्य अतिथि वरिष्ठ भाजपा नेता प्रशान्त मिश्रा व प्रभात वर्मा मौजूद थे। वक्ताओं ने स्वच्छता मिशन में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करने की अपील करते हुए मोदी सरकार व प्रदेश की योगी सरकार की कल्याणकारी नीतियों का विस्तार के साथ वर्णन किया

और जन–जन तक नीतियों को पहुँचाने का आहवान किया। बाल्मीकी समाज के बच्चे लाल, सुशीला बाल्मीकी, शिवकुमार बाल्मीकी, रामसेवक बाल्मीकी, जितेन्द्र बाल्मीकी समेत 10 व्यक्तियों को माला पहनाकर और स्मशति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मुस्लिम महिलाओं ने प्रोग्राम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम में आसिफ, मास्टर शमीम, मो0 अल्ताफ, नूरेमन, फराज चिक्की, ताजुद्दीन कुरैशी, मो0 अनस, मो0 शफकी अंसारी, सायरा बानो, शकीरा बानो, आलिया, सादिया बानो, मालती देवी, नजमुद्दीन राईन, वसीम बाबा, लालाराम चौहान, जुबेर खान, जुबेर अंसारी, रामलाल, शींशी फातमा, विजय सिंह, संदीप सिंह, ताहिर किदवाई आदि उपस्थित रहे।

पुलिस ने 20 वारण्टी व अन्य 09 अभियुक्तों को किया गिरफ्तार 53 अभियुक्तों के विरुद्ध शांतिभंग की कार्यवाही

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। जनपद में संदिग्ध व्यक्तियों वांछित अभियुक्तों वारंटियों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस द्वारा 20 वारण्टी व अन्य 09 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया तथा 53 अभियुक्तों के विरुद्ध शांतिभंग की धाराओं में कार्यवाही की गयी। थाना लोनीकटरा पुलिस टीम द्वारा मु०अ०सं०–72 व 74/2022 धारा 457, 380, 411 भादवि से सम्बन्धित अभियुक्तगण शिवकुमार उर्फ ननकऊ पुत्र दुन्नी निवासी ग्राम देवनपुरवा अमरवल क्रिसिया थाना सुबेहा जनपद बाराबंकी, दुर्गा प्रसाद उर्फ छोटकऊ पुत्र हीरालाल निवासी ग्राम भटगवां थाना सुबेहा जनपद बाराबंकी को आज गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के पास से चोरी किये गये 800 रूपये नकद बरामद किया गया। थाना कोतवाली नगर पुलिस टीम द्वारा

मु०अ०सं०–645/2022 धारा 420, 406, 467, 468, 471, 109, 504, 506 भादवि में वांछित अभियुक्तगण हिमांशू गुप्ता पुत्र विनोद गुप्ता निवासी ग्राम बेहमा थाना रामपुर कला जनपद सीतापुर, गुड्डू विश्वकर्मा पुत्र छत्रपाल निवासी ग्राम जमुनाडीह मरहमतनगर थाना महमूदाबाद जनपद सीतापुर, नन्दिनी विश्वकर्मा पुत्री स्व० दुर्गाप्रसाद विश्वकर्मा निवासी कैथी टोला कस्बा व थाना महमूदाबाद जनपद सीतापुर को आज गिरफ्तार किया गया। थाना लोनीकटरा पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त दुखीलाल पुत्र स्व० मलहू निवासी ग्राम शिवनाम थाना लोनीकटरा जनपद बाराबंकी को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के पास से 20 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गयी। अभियुक्त के विरूद्ध थाना लोनीकटरा पर मु०अ०सं० 348/2022 धारा 60(1) आबकारी अधिनियम पंजीकृत किया गया। थाना कोठी पुलिस द्वारा मु०अ०सं० 258/22 धारा 380/411 भादवि तथा मु०अ०सं० 289/22 धारा 420,411 भादवि से संबंधित वांछित अभियुक्त संजय द्विवेदी पुत्र राजाराम निवासी पूरे जबर मजरे हकामी थाना असंद्रा जनपद बाराबंकी गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के पास से चोरी की गई पीतल की घंटियां एवं 01 अदद मोबाइल बरामद किया गया। थाना मसौली पुलिस टीम द्वारा मु०अ०सं० 493/22 धारा 363, 366 भादवि से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त राहुल पुत्र हनुमान निवासी ग्राम तलहा मजरे रसौली थाना सफदरगंज जनपद बाराबंकी को आज गिरफ्तार किया गया। थाना सुबेहा पुलिस टीम द्वारा अभियुक्ता मीना देवी पत्नी नकछेद गौतम निवासी ग्राम पलिया थाना सुबेहा जनपद बाराबंकी को गिरफ्तार किया गया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)
मोबाइल नंबर 9450475366
Email
prayagdarpan@gmail.com
R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।